

संज्ञा : सम्प्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : संबन्ध :

प्रत्ययहीन सामासिक रूप मिलता है

एक स्त्री० हाँस बहु १४

एक०पु० के प्रत्यय युक्त उदाहरण नहीं है।

एक० स्त्री० में —नी प्रत्यय मिलता है जो बहु०पु० संबन्धी के साथ लगता है, यथा

शुधि लड़पनी १४

बहु० पु० के भी प्रत्यययुक्त उदाहरण नहीं है।

बहु० स्त्री० में—हि प्रत्यय मिलता है, जो बहु० पु० संबन्धी के साथ लगा हुआ है।
हृषीहि घोड़हि १५

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन संज्ञा सम्ब एक०पु० में केवल निम्नलिखित हैं। पञ्च ११

बहु पु संज्ञा सम्ब प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं। कान १४

स्त्री० के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं है।

एक०पु० —३ । — प्रत्ययों के साथ मिलते हैं

(अकारान्त में) —३ पल्लव १२

— बरे १४

एक०स्त्री० अकारान्त सम्ब — प्रत्यय के साथ मिलते हैं। बोत्तम १४

बहु० पु० स्त्री० अकारान्त। इकारान्त सम्ब—हि प्रत्यय के साथ मिलते हैं।
कानहि ११ बाँधहि ११

संज्ञा : संबोधन :

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम धात्यों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्यययुक्त केवल एक उदाहरण है

—नरं संबन्ध० बहु० पु० अम्हाणरं १०

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वशाय : तृतीय पुस्तक : [तथा सर्वशायवाचक सचनानाम् एवं सर्वशायवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन रूप केवल निम्नलिखित है

सर्व० कर्ता० (मूल) एक० स्त्री० इत १२

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है

—० सर्व० कर्ता० (मूल) । कर्म० (मूल) तथा वि० एक० पु०

जा ११ सो ११ सो १२, सो १२, सो ११

—१ सर्व० कर्ता० (मूल) एक० स्त्री० सा १४

—हि सर्व० कर्म० (विद्युत) बहु० पु० जानहि ११

—२ वि० बहु० एतु १०

सर्वनाम सर्वशायवाचक [तथा सर्वशायवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन रूप नहीं है।

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति निम्नलिखित है

—० सर्व० कर्म० एक० पु० जो ११

—हि सर्व० कर्ता० एक० पु० कहि १४

—१ वि० एक० स्त्री० जा १४

सर्वनाम : प्रत्ययवाचक [तथा प्रत्ययवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग केवल निम्नलिखित है

कर्म० एक० पु० जा १० बाद १२

प्रत्यययुक्त प्रयोग की केवल निम्नलिखित है

—तु सर्व (१) एक० पु० वातु १४

—तुगनी सर्व एक० पु० वातुगनी १२

सर्वनाम : निश्चयवाचक [तथा निश्चयवाचक विशेषण]

कोई उदाहरण नहीं है।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है

एक० । बहु० पु० स्त्री० । वातु १२ मयत १३ मु १३ पार १७ ।

प्रत्यययुक्त प्रयोग निम्नलिखित है

—३ । ३ एक० बहु० पु० इत १० जात ११ रह ११ जात १२

जा [३] १२ समाप्त १२ कंत १२ हीत १३ जात १४

[—] अ प्रत्यय ऐसे पु० अकारान्त विशेष्य शब्दों के साथ ही प्रयुक्त हुए हैं जो प्रत्यययुक्त विशेष्य के पूर्व, विशेष्य के रूप में स्वयं अपना विशेष्य के अनंतर आए हैं।]

—१ एक स्त्री० पु० मु० की १२ बहरी १४ करी १४, बहरी १४

[—] अ प्रत्यय अकारान्त। अकारान्त विशेष्य शब्दों के साथ ही गया है।]

—२ बहु पु० सु० ११

— बहु पु० ण ११

[—] अ प्रत्यय ऊपर या मुक्त है, बहुवचन रूप देने के लिए उसके साथ

— समायोजित है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य कर्तमान :

—अह ए पु० एक० पु० स्त्री० [छो] रह ११ बह ११ मोह ११,

आह ११ बह ११ ब[र]ह १२, करह १२ रोह ११

मोह ११ मुह १४ नाह १४, पह १४ रोह १४

—इ ए० पु० एक० पु० आति ११

—अति ए पु० एक स्त्री आति १४

—अहि : ए पु० बहु० पु० : आहि ११

क्रिया : सप्तम्यार्थ कर्तमान :

—अह ए पु० बहु० पु० आह १० रोह १०

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृष्णत :

—इज ए० पु० एक० पु० भूत कृष्णत क्रिज १२, माक्रिज ११

—ईज ए० पु० एक० पु० भूत कृष्णत बीज ११

—ई " " स्त्री० " क्रि १२

[सामान्यभूत अक क्रियाओं के वचन और लिङ्ग कर्ता के अनुसार तथा सक० के कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य लक्ष्यत :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : पूर्वकालिक कृष्णत :

एक ही उदाहरण है

— एक० पछरे पर ११

क्रिया : कर्तमान कृष्णत :

—अह ए० पु० एक पु०

रोह १२, बीह ११

—अह ए० पु० बहु पु०

बीह १२

क्रिया : अविध्यन् कृदन्त

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : क्रियः

—अट डि० पु० एक० पु०

बाहुट १३

—उ डि० पु० एक० पु०

कालकु ११ कोकु १२

क्रियात्मक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं है।

अध्यय छात्रों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अध्यय : स्थान सूचक :

— एक ११, सेव १३

अध्यय : काल सूचक :

— सं १४

अध्यय : स्थिति सूचक :

पर कण्ठरे पर १३

अध्यय : कार्य प्रकाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अध्यय : संबोधक :

—जो वर १० वा ११

— अनु ११

अध्यय : निवेद्य सूचक :

अप्यमहीन न न ११ न १३ न १४

—उ नर ११ नर ११

—न ना ११

[विष्णु न से वा छंर की माताओं को पूरा करने के लिए किया गया लगता है।]

अध्यय : निरचय सूचक :

—इ सपलद १३

—उ अरु १४

—उ बाकीरद १०

अध्यय : संबोधक सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : परिमाण सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : प्रश्न सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

बहुवचन नकारात्मक

संज्ञा सम्बन्धों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ता (मूल)

एक० पु० स्त्री० विभिन्न स्वतंत्र संज्ञा धर्म प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं।

पु० कछ्वा १७ बछ्वा १८ कंप् १७

स्त्री० कंठी १९ टकिकि १८

एक० पु० अकारान्त संज्ञा धर्म — तथा —उ प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं।

— समाहु १७ संगड १७ पहिरणु १७ बधु १८ जधु १८

—उ पासउ १८

ए स्त्री के कोई प्रत्यययुक्त रूप नहीं मिलते हैं।

बहु पु० अकारान्त धर्म प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं।

यस १९, टेल्क १८, मडन खंडन १९ बोस्क १८

बहु स्त्री० के कोई प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं मिलते हैं।

बहु पु० अकारान्त संज्ञा-धर्म — प्रत्यय के साथ मिलते हैं, यथा हीमा १९

बहु स्त्री० के प्रत्यययुक्त प्रयोग नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्ता (बिभक्त)

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म (मूल)

एक पु० अथवा स्त्री०-संज्ञा धर्म प्रत्ययहीन रूप में नहीं मिलते हैं।

एक पु० अकारान्त संज्ञा धर्म — प्रत्यय के साथ मिलते हैं क्यम १९

एक० स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु स्त्री० संज्ञा धर्म प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं बधु १७

बहु० पु० के उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म (बिभक्त) :

एक० पु० अथवा स्त्री के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु० पु० — प्रत्यय के साथ मिलता है जधु १९

बहु० स्त्री — प्रत्यय के साथ मिलता है मोरी १९

१ : करण :

प्रायवहीन रूप नहीं है।

एक० पु० में दो प्रायव मिलते हैं ३- तथा ०-न जिसमें से दूसरा प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का एकशब्द का प्रयोग है।

०-न पु० १५
०-न एवेषहि १६

एक० स्त्री० में-हि प्रायव मिलता है कंयुविमहि १६

बहु० पु० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

२ : सञ्ज्ञान :

एक० पु० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु० पु० में -न प्रायव मिलता है टीहा १५

स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

३ : अवाधान :

एक० पु० में -ई प्रायव मिलता है वागई १८

४ : सर्वेष :

प्रायवहीन स मासिक रूप मिलते हैं

एक०।बहु० पु०।स्त्री० अद्वा वातु १५, अर्धय संवातु १७ कंयु विमहि १७
चंद लवागा १५, देहि पु० १५

एक० पु० में -हि तथा -केरा मिलते हैं

-हि का प्रयोग एक सर्वेषी के साथ हुआ है संसहि ओमहि संगत १७

-केरा का प्रयोग बहु० सर्वेषी में -हि प्रायव लगा कर दिया गया है

वापरेहि केरा वदितु १७

एक० स्त्री० के उदाहरण नहीं है।

बहु० पु० में -ई प्रायव प्रयोग मिलता है इसमें सर्वेषी भी बहु० है

अगई हीआ १५

बहु० स्त्री० के उदाहरण नहीं है।

५ : अधिकरण :

प्रायवहीन प्रयोग नहीं है।

एक० पु० अवाधान प्रयोग -ई -उ तथा -ट प्रयोग के साथ मिलते हैं

-ई बहि १६ अगि १७

-उ वागउ १८

-ट वातु १५

एक० ए० के उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पु०।भी० घट्ट —हि प्रत्यय के साथ मिलते हैं

अपिहि १६ अर्वाहि १७ विपुर्वाहि १७

संज्ञा : संबोधन :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

एक० पु० में — प्रत्यय के साथ मिलते हैं टेस्किमुतु १५

ए० तथा बहु० के कोई उदाहरण न प्रत्ययहीन प्रयोगों के हैं और न प्रत्यय युक्त के।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष

केवल दो उदाहरण मिलते हैं जो कर्ता० (मूल) के हैं और प्रत्ययहीन हैं

कर्ता (मूल) एक पु० तुह १५, तुह १५

सर्वनाम : तृतीय पुरुष [तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम एवं लक्षितवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग कोई नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त प्रयोग विभिन्न कारणों में निम्नलिखित हैं

— १ कर्ता० (मूल) कर्म० (मूल) एक पु० ए०। १५, १५, १७

— २ कर्म० (निष्कृत) बहु० पु० से १७

— ३ कर्म० (निष्कृत) बहु पु० में १५

— ४ संबन्ध० एक ए० समु १८

कारण संप्रदान अपादान अधिकरण और संबन्धन कारणों के उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम : संबन्धवाचक [तथा संबन्धवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन कय नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति इन प्रकार है

— १ सर्व कर्म (मूल) तथा वि एक पु० [जो?] १५, जो १५
जो १७ जो १७

— २ वि बहु पु० में १७

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम : [तथा निश्चयवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

विशेषण चार्थों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विषय :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं —

एक०+बहु० पु०+स्त्री० केह १५, बुह १९, पर १५, सब १७

प्रत्यययुक्त प्रयोग निम्नलिखित हैं

— एक०+बहु० पु० एकहु १५, सब १९

[— प्रत्यय अकारान्त विशेषण चार्थों में लगता है, जो विशेष्य के प्रत्यययुक्त होने पर, स्वयः विशेष्य के रूप में अथवा विभक्त्य के अन्तर आते हैं।]

— एक०+पु० केहा १५, सेहा १५, बडा १५, [क]ह्य १९, दित्ता १९, मत्ता १९, बेरंका १७ एहा १९ मुहावा १८

— एक०+स्त्री० जलानी १९ एही १८

[मह — १] अकारान्त+अकारान्त विशेषण चार्थों में लगा है]

— बहु०+पु० सबाणा १५, एहा १९ सेहा १९ इतरा १८ मंदा १८

— बहु० पु० (विदित) आपुपाहें १७

[इस प्रत्यय वा उपसर्ग विशेषण के विदित रूप-निर्माण के लिए किया गया है।] क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विधा : सामान्य वर्तमान :

—अहि डि०+पु० सांगहि १५, भास [हि] १५

—अद तु०+पु० एक०+पु०+स्त्री० भिगद १५, सोहद १९ मोहद १९, पावद १८, परा १८ सोहद १८ बाहद १८

—अहि तु०+पु० बहु०+पु० मोहहि १९ बीगहि १७ उपीमहि १७

—अ तु० पु० बहु० पु० पर १८

क्रिया : लंकावतार्थ वर्तमान :

—अ डि०+पु० एर पु० बेहु १५, बेहु १५

—अद । —अद तु०+पु० एर० पु० अभिगद १५, रिह्य १५
मोहयका १९

क्रिया : सामान्य भूत और भूत इतना

—अ तु०+पु० एर० पु० सामान्य भूत हु १५

—अ बेही बेही हो १७

—ए तु० पु० बहु० पु० सामान्य भूत परे १९

[सामान्यभूत अर्ध-क्रियाओं के अन्तर्गत और भिन्न वर्गों के अनुसार तथा मर० के वर्गों के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यतः :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : पूर्वकालिक कृत्यन्त :

—अ एक० बहु० मस १८ मस १८

—इ एक० बहु० [नि] हाकि १६ करि १६ उहि
निहाकि १७ उहि १८ उहि १८ निहामि

क्रिया : वर्तमान कृत्यन्त :

—अति वृ० पु० एक स्त्री पदसति १८ वानति १२

—अव वृ० पु बहु० पु अवसवह १५

क्रिया : भविष्यत् कृत्यन्त :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि

—उ हि पु एक० पु० वेहु १८

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं है।

अध्यय पद्यों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अध्यय : स्वान सूचक :

— अ पशु १५

अध्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अध्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अध्यय : संयोजक :

— न १७ न १७

अध्यय : निर्वच सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अध्यय : निश्चय सूचक :

— मयजू १६

इ गोरह १७

नि एकत्रेचनि १६

हि : पापरेहि १७

पु पु १८

अध्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

प्रथम : परिमाण सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

प्रथम : प्रमाणसूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

पंचम मूल-शिक्षा

महा मन्त्रों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ता कारक (मूल)

एक० पु० गी० विभिन्न स्वरगत महा मन्त्र प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु० वेग १९, वेग १९ अम्बजल २० रवि २ टीका २१ टीका २२
पात २२ कुज २४ पाता २५ कोह २६ गुरुसि २९

रवी० टीका २२ मोह २६, कांठीबंदी २६ पञ्च २७

एक० पु० अकारगत महा मन्त्र — १-३ प्रत्यय के साथ मिलते हैं

— माह्य २३ ताप २३ भूमय २३ हास २४ हास २४
अनुरा २४ अम्बजल २४ हास २५, जल २५, माह्य २५,
उत्ताप २५ आम्ब २६ जल २६ जल २७ मोन २७

— ३ आम्ब २३ ताप २३ ठेर २४

एक० रवी० महा मन्त्रों के कोई प्रत्यय युक्त रूप नहीं है।

बहु० पु० महा मन्त्र प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

दग २० दिग्दल २० पात २२ कुलीपुत्र २३

बहु० पु० महा मन्त्र — तथा- प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं

— जल २६ भूमय २६

— तदन २० तारे २० तारे २१

बहु० रवी० अकारगत महा मन्त्र — प्रत्यय के साथ मिलते हैं

भरही २१ अम्बजल २५

संज्ञा : कर्ता (विहित)

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म (मूल)

एक० पु० गी० विभिन्न स्वरगत महा मन्त्र प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु० दग १९, अम्ब २२ अम्ब २६ आम्ब २७

गी० गीतगी १० टीका २१ अम्ब २० अम्ब २३

एक पु० अकारगत महा मन्त्र — १३ प्रत्यय के साथ मिलते हैं

— अम्ब २४ आम्ब २६ अम्ब २९

ए०—४

—उ सोला आसत २३

एक०स्त्री० के प्रत्यययुक्त और बहु० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विष्णु)

प्रत्ययहीन रूप के कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।

एक पु० संज्ञा सम्बन्ध —हि प्रत्यय के साथ मिलते हैं

मनसहि २३

एक०स्त्री० के कोई प्रयोग नहीं हैं।

बहु० पु० अकारान्त सम्बन्ध प्रत्यय युक्त हैं

बनबारा २२

बहु स्त्री संज्ञा सम्बन्ध — प्रत्यय के साथ मिलते हैं

बंरहाई २५

संज्ञा : कर्म :

प्रत्ययहीन रूप में कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।

एक० पु० स्त्री० में — प्रत्यय मिलता है

पाई २ छात्र २८

बहु०पु०स्त्री० का कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : सम्प्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा-संबन्ध

प्रत्ययहीन सामासिक प्रयोग इस प्रकार मिलते हैं

एक०।बहु० पु०।स्त्री० काँडा [की]लुण २६ काँडे बेंटी २५ कुडीपुठ २२

बनुजडणी २१ भिकाडी छरिणी २१ मुहससि २२, मुहससि बोका

२२, सरस बळय २५, मुहससि २६

कभी-कभी समास एक० संबंधी को — नुक्त करके बनाए गए हैं

एक धनु तटीमनु २४

एक संबंधी के साथ एक०।बहु० पु०।स्त्री० में—हि प्रत्यय मिलता है:

एक०पु० चाँदहि ठपर २१ चाँदहि जल २५, बैतहि मोनु २७

बहु०स्त्री० चाँदहि बंरहाई २५

एक०संबंधी के साथ एक पु० में —र।—रउ प्रत्यय मिलते हैं

रैर मूठेर हाव २५, नीयेर चाँदहि २५, नीयेर जगल २५

रउ मूठेरउ हाव २४

एक० संघर्षी के साथ बहु० पु० में -र तथा -रे प्रत्यय मिलते हैं

-र ताड़र पाठ २२

-रे छोड़ रे पाठ २२

एक० संघर्षी के साथ एक० स्त्री० में -कैरि प्रत्यय का प्रयोग हुआ है

[६] हल केरि छोड़ २३

बहु० संघर्षी के साथ एक० पु० में -हु अवस्था -हु प्रत्यय लगा कर 'केरत'

अवस्था 'कर' का प्रयोग हुआ है

-हु ते(वे?)केहु बापहु कैर २० हारहु अवहार २४

-हु केरत बरडिहु केरत उबेमु २०

-हु कर सरीसहु कर हार २४

एक० संघर्षी के साथ बहु० स्त्री० में -करी प्रत्यय मिलता है

बाग्य करी घलू बडपी २१

संज्ञा : अपिकरण

एक० पु० स्त्री० दोनों में ही प्रत्ययहीन रूप मिलते हैं

पु० मय २०

स्त्री० माँट २२

बहु० स्त्री० के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं हैं।

एक पु० में तीन प्रत्यय मिलते हैं

अवाचल में -रि स्वासि २०

अवाचल में -र बापे १९ बगहर बापे २४ राठले २०

" : - गतेहि २१ ओठरे २४

एक० पु० स्त्री० में -हि । हि प्रत्यय मिलता है

कोहि २३ अउहि २५

एक० पु० स्त्री० में - प्रत्यय मिलता है

वेज २० ओलस २२ दिष २५

एक० पु० में -हि प्रत्यय मिलता है

-हि ओपहि २५

बहु० पु० स्त्री० में -हु प्रत्यय मिलता है

-हु बानहु २२ लोणहु २४ मगहु २४

संज्ञा : संबोधन

एक० पु० में प्रत्ययहीन प्रयोग मिलते हैं

बाग्यर २१ बग्यर २१ बग्यर २१

एक० स्त्री० के प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

एक पु० में - तथा -ने प्रत्यय युक्त प्रयोग मिलते हैं

- राग १९

— - बेटे १९

—० बंदिरो १९ बंदिरो २२ बंदिरो २४ बंदिरो २६
बहु० के कोई उदाहरण न प्रत्ययहीन के हैं और न प्रत्यययुक्त के।
सर्वनाम राज्यों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुण्य

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्यययुक्त के केवल दो कारकों के उदाहरण मिलते हैं

—हि कर्म० एक० पु भोहि २६

—रे सर्व० बहु पु अम्हारे २

सर्वनाम : द्वितीय पुण्य :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है

कर्ता (मूल) एक० पु पु १९, तु २१

प्रत्यययुक्त केवल दो उदाहरण मिलते हैं

—ई करण० एक०पु तर्हि १९, तर्हि १९

सर्वनाम तृतीय पुण्य [और अविच्छेदवाचक सर्वनाम तथा लक्ष्यवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग इस प्रकार है

कर्म (मूल) एक० स्त्री० एह २१

कर्म० (विभक्त) एक०पु स १९ एह २१ नाम २९

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है

—० कर्ता (मूल) कर्म (मूल) एक०पु० स्त्री० सो २१ सो २४
सो २७ सो २७

—१ कर्ता० (मूल) बहु० स्त्री दाहि २१

—२ कर्म० (विभक्त) वि० बहु०पु० स्त्री० ते १९, ते २०, ते २५

—तारु सर्व० एक०पु० तारु २६

—रे " तारे २७

(‘तारु’ के स्थान पर ‘तारे’ का प्रयोग सर्ववचन के विभक्त रूप में होने के कारण किया गया लपटा है।)

—तारि सर्व० एक स्त्री० तारि २१

—ही " बाही २५

सर्वनाम सर्ववचकारक : [तथा सर्ववच वाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है—

विशेषण एक० स्त्री० ज २० ज २६

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है

—० सर्व कर्म० (मूल) एक पु० जो २४

- वि० बहु० स्त्री० अ २५

सर्वनाम : प्रत्ययवाचक [तथा प्रत्ययवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं

वि० एक० पु० का २४

स्त्री० (मूल) एक०स्त्री० बाहु २१

प्रत्यययुक्त प्रयोग नहीं है।

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्यययुक्त केवल एक प्रयोग मिलता है

—जी सबब०वि०एक०स्त्री० आपनी २२

विद्यमान शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं —

एक०बाहु० पु०।स्त्री० एक २० कील १९, विड २० वा २२, पा (पा) २३

वि २६, सष २६, साष २०, सेंद्री २६, विन्द्री २६

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित हैं

—उ एक० पु० बहमड २४ बहमड २५, बलिज [उ] २५

[उ प्रत्यय ऐसे अकारान्त पुलिग विशेषण शब्दों में लगता है जो प्रत्यययुक्त विशेषण के साथ तबत विशेष्य की भाँति अपना विशेष्य के अनन्तर प्रयुक्त हुए हैं।]

—१ एक० पु० केन्ना २२

—१ " " लग्ना २३ बहमी २३

—२ त्वाचिक एक पु० बहर १९, तेहर १९, केहर २२,

बहमर २६, बहर २०, तेहर २०

—१ एक०।स्त्री० लिली २३ बहमी २३

[—१ प्रत्यय अकारान्त। अकारान्त विशेषण शब्दों में लगता है।]

—२ बहु०।पु० लपु २०

—२ बहु० पु० पीड १९, राग २३

[— प्रत्यय अकारान्त अकारान्त विशेषण शब्दों में लगता है।]

— बहु० पु०।स्त्री० लपु २३, लपु २३, बहमी २३, बहमी २३

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

—बसि	हि पु एक पु •	[बो] छसि १९, मूकसि १९, नागसि १९, बेकसि २१, बारसि २२, हापसि २२
—बह	व पु पु • स्त्री •	[भा] बह २२, माबह २२ [मू]- सह २४ बीबह २६ पदसह २७ बीसह २८
—ह	व पु एक पु •	बाहि २७
—बधि/बधि	व पु बहु पु •	माबधि १९ मूसधि २
—ब	व पु बहु पु •	पूछ १

क्रिया : संभावनाई वर्तमान :

—बह	हि पु • एक पु •	कपह २७
—बीबह	व पु • एक • बाहु • पु स्त्री •	कीबह २३ हसीबह २३ कीबह २६ बीबह २६
—बए	व पु • बहु पु •	यधिए २१
—बई	व पु • बहु पु •	छोईई २२

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृष्ण

—बउ	व पु एक पु • सामान्यभूत	भउ २४
—इबउ	व पु • एक पु • भूत कृष्ण	मिस्मिउ २५
—एउ	वही	माडेउ २८
—एउ	वही	पसारउ २७
—इबउ	वही	पैहिबउ २५, ओहिबउ २६
—इसा	वही	यठिबा २३
—इठे	वही	पहिठे २२
—एउठे	वही	भेउठे २०
—इ	व पु • बहु पु • सामान्यभूत	बीठे १९, दीठे १९, दूछे २ हारे २१
—इ	वही भूत कृष्ण	रांवे २२, माठे २३
—एगु	वही	बाबगु २०
—अइ	व पु • एक • स्त्री • सामान्यभूत	भइ २२

[सामान्य भूत अकर्मक क्रियाओं के बचन और क्रिया वर्तों के अनुसार तथा एक • के बचन और लिंग कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : पूर्वकालिक कृष्णत :

-२

एक०।बहु० देति १९, देति २० जा[हि] २१ लहि २२
देति २४ देति २४ गुणि २६ देति २६ छादि २७
एक० हवे २१

क्रिया : वर्तमान कृष्णत :

- अनु

डि० पु० एक० पु० जानु १९

- अन

पु० पु० बहु० पु० खणहव २६

क्रिया भविष्यन् कृष्णत

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि :

- अट

डि० पु० एक० पु०

वीरट २७

- उ

डि० पु० एक० पु०

देनु २१ देग २१ बोल १७

क्रियाचक संता

कोई उदाहरण नहीं है।

अभ्यया की विधि नीचे दी जा रही है।

अभ्यय : स्थानसूचक :

प्रायपहीन

कठ १९, कठह १९, ऊपर २१
ऊपर २०

-

अभ्यय : काल सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अभ्यय विधिति सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अभ्यय : कार्यप्रवाही सूचक :

-

एक २२ एक २३

-

कहा २० जहान १ कहने २६ जहान २७

अभ्यय : समयसूचक :

प्रायपहीन क २७

-

जगु २१ जगु २२ जगु २३

-

जनि २० जनि १९

-

जा २७

अध्याय निवेदनसूचक :

प्रत्ययहीन न २१ न २४

अध्याय : निवेदन सूचक :

हि हि २१

इ सावह २०

उ २१

उह १९ उ २० उ २१

ए सीए २४

अध्याय : संक्षेपन सूचक :

ऐ एक० ऐ १९ ऐ १९ ऐ २१ ऐ २१ ऐ २१ ऐ २२
ऐ २३

अरे एक० अरे २१ अरे २१

अध्याय : परिमाण सूचक :

प्रत्ययहीन अति २६

— विष्णु २२

अध्याय : प्रश्न सूचक :

प्रत्ययहीन किकी की १९, कि २७

पठ मल-रिक्त

संज्ञा सभों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्त्ताकारक (भूत)

एक० पु० ल० विभिन्न स्वरात्म संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु० कवि १९, कवि ४० भूत १८, विहृ[वनी] ४ सोहर १२

स्त्री० जवाब ४२, जीम १२ रति ४४ सावि ४१ बागभी १९

बुधि ३९ सोह ४१

एक पु० अकारात्म और अकारात्म संज्ञा शब्द कमसे — और — प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं

— पु० २८, कामदेव २८, निताह २९, वातु २९, वा [३]

१ नाहु ३१ कामदेव ३२ बीतु ३४ भीतु ३४ नाहु

३८ हाक ३९, संताक ३९, वैतु ४१ बाधवा ४२

नितातु ४२, वैतु ४३

— उ लोकाह २९ ओदिव ३०

बहु पु० ल० विभिन्न स्वरात्म संज्ञा शब्द भी प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु० नाव १९, बहिन ३४ मयल कलम ३७

स्त्री० मयल बाल ३७ अह ३०

बहु० पु० अकाराण्ट सभा राज्य — प्रत्यय के साथ भी मिलते हैं
कारा ३२ हिजा ३४ कडा ८०

बहु० स्त्री सभा राज्य प्रत्ययसुबन्ध रूप में नहीं है।

संज्ञा कर्ता विहित रूप :

प्रत्ययहीन प्रयोग एक ही है

एक० पु० काय ३१

एक० पु० अकाराण्ट सभा राज्य — ई प्रत्यय के साथ मिलते हैं
— कायदेव ४०

बहु० पु० अकाराण्ट सभा राज्य भी — ई प्रत्यय के साथ मिलते हैं
— ई बीड ३५

स्त्री० एक० अकाराण्ट सभा राज्य के कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म (भूल)

एक० पु० सभा राज्य प्रत्ययहीन रूप में नहीं है।

एक० स्त्री० सभा राज्य प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

छाप ४४ सोमराट ३८ सोह ४० सोह ३६ सोह ४३ सोह ३५
सोह ३८ सोह ३९ सोह ४० सोह ४२ एकावति ३० एक भावति
४१ कावुनी ४०

एक पु० — ई प्रत्ययों के साथ मिलते हैं

— उक्त २८ ग्रापण २९ लग ३२ हविषा ३२ वादन
३३ वाद ३३ हरिष ३३ सोह ३५ व [पल] ३६
उमान ३६ सगाह ४० राह ४५
— ७ निवाह ३८

बहु० पु० सभा राज्य प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

हविषार २८ वाता ३३ वृहा ३

बहु० पु० अकाराण्ट सभा राज्य प्रत्यय के साथ मिलते हैं
टीके ३१

बहु० स्त्री के कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा कर्म (विद्वत्)

एक० पु० सभा राज्य — ई प्रत्यय के साथ मिलते हैं

वाली ३० वागति ३०

एक० स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु० पु० सभा राज्य — सभा — ई प्रत्यय के साथ मिलते हैं

— वाग ३३

— वागति ३४

बहु० स्त्री० संज्ञा सम्ब — प्रत्यय के साथ मिलते हैं

बहु ४५

संज्ञा करण

एक पु स्त्री संज्ञा सम्ब प्रत्ययहीन रूप में नहीं है।

एक पु स्त्री० में तीन प्रत्यय मिलते हैं — ई — ई तथा — ई सहु

— ई मर २८

— ई मुगई ३० मगई ३१ लकुरई ३४

— ई सहु काकई सहु ४१

बहु पु० में — ई प्रत्यय मिलता है

पस्यहि ४२

बहु स्त्री के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : सप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा अपादान

प्रत्ययहीन प्रयोगों के कोई उदाहरण नहीं हैं।

एक पु० में — कई प्रत्यय मिलता है

तल्लई ३५

एक स्त्री० तथा बहु० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा संबंध

एक लङ्ग० पु० स्त्री० सामासिक रूप इस प्रकार हैं

नखत बाळ ३७ मंगळ कलस ३७ बारि ओहू ३८ समुदाह कज ३९

कनी-कनी समास संबंधी को उकारान्त करके बनाए गए हैं

चहु ओछन ३७

बहु पु संबंधी के साथ एक । बहु० पु० स्त्री० में — ई प्रत्यय का प्रयोग हुआ है

— ई छप्पीहि आछाई आछिहि ३० छप्पाई पुवह नाकु ३१

आगाई सोहर ३१ तक्काई हिमा ३४ बीबी फसह सोह ३५

पनाकाई सोह ३५ असो(अ)पस्यबई सोह ३९ आपई जूस

३८ [ता]नई भासई रासमेले ४६

एक पु संबंधी के साथ एक पु स्त्री ॥ — ई प्रत्यय का प्रयोग मिलता है

पु० काम्हह ३१ नरहहह निरी ४१ काम्हहह आलवान ४२,

काजह मांजु ४५

स्त्री परह सोह ३८

एक स्त्री० सम्बन्धी के साथ — ई प्रत्यय का प्रयोग हुआ है

तकरीहि आलिहि ३१

एक० पु सम्बन्धी के साथ — ई । हि० एक स्त्री संबंधी के साथ — ई तथा

बहु० पु संबंधी के साथ — हुँ बना कर — करइ तथा — करइ प्रत्ययों का प्रयोग

मिलता है

—करद सौहहि करद पागद १८

—करउ कामदेवह करउ रवायम २० आठम्वहि करउ बा[१] १०
मातिहि करउ काम ११ पुनिबहि करउ बापु ११ माठिहि
करउ मिथानु ४२ कागदहिर करउ वनु ४३ पाटनीहि करउ
बेनु ४३ मीनीहु करउ हाथ १९

एक० पु० मन्त्री० सबंधी के साथ बिना कोई प्रत्यय लगाए और बहु० पु०
सबंधी के साथ —इ प्रत्यय लगा कर एक० सबंधी० मे —करी प्रत्यय का
प्रयोग हुआ है

मुह करी सोम १६ बडिबरी काबुली ४० केसह करी माठि ४३
एक० बहु० सबंधी के साथ बहु० पु० मे —केरा प्रत्यय का प्रयोग मिलता है
सोमा केरा बूरा ३९

एक० पु० सबंधी के साथ —इ और एक० सबंधी० सबंधी के साथ —हि प्रत्यय लगा
कर बहु० पु० मे कयाकराह का प्रयोग मिलता है

करा पुनिबहि पुनिबहि करा चांद ३५ आलाह कर मंयल बसत ३७
कराह नामदेवह कयाह घाह १८

एक० पु० सबंधी के साथ बहु० सबंधी० मे —करी प्रत्यय लगा मिलता है
आतिबिब करी रामुमई ३४

बहु० पु० सबंधी के साथ —हु तथा सबंधी० सबंधी के साथ —हि प्रत्यय लगाकर
—करद प्रत्यय लगा है

बापुहुकरद बयई ३३, आतिहि करई पुनई ३०

बहु० सबंधी० सबंधी के साथ बहु० पु० मे —र प्रत्यय लगा मिलता है
आतिर फाटा ३२

संज्ञा : अधिकरण :

प्रायवहीन मन्त्रा शब्द बसत एक० पु० मे है समुदाद बत्र १६ आंसल ३७
सबी० और बहु० के उदाहरण नहीं है।

एक० पु० मे —ई —ई १— २— ३— प्रत्यय मिलने है

—इ पागद १३ पागद १८ हिमद ४४

—ई १— आति २५ मिथानि ३१ सबी (मि?) ३४ माति ३८

—उ काम ३१ माठ ३८ मातु ४५

—उ करउ ३१

एक० पु० सबंधी मे — प्रत्यय मिलता है

बह ३७

बहु० पु० मे —इ। तथा —हि—ही प्रत्यय मिलने है

—द कोवर्ह १५

—हिही कानही ३४ हायही ३९, पायही ३९, कोवर्हि ४२, कोवर्हि ४४

संज्ञा : सर्वोचन :

एक० पु० सखा राज्य ही प्रत्ययहीन कर्म में मिलते हैं
कोव २८

एक० स्त्री० और बहु० के प्रत्ययहीन अवस्था प्रत्ययहीन अवस्था प्रत्यय
मुक्त प्रयोगों के कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम सखा की स्थिति नीचे की जा रही है।

सर्वनाम प्रथम पुंस्य

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्ययमुक्त प्रयोग का केवल एक उदाहरण मिलता है

—रह संवत् ० बहु० स्त्री० सम्हारह २८

सर्वनाम द्वितीय पुंस्य :

प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है

प्रत्ययहीन कर्म (विहित) बहु० पु० पुम्ह ४०

—ह कर्ता० (मूलाविहित) एक० पु० पुम्ह २८, पुम्ह ३२

—ह बहु० करण० एक० पु० वह सङ् २८

—म्हहि सारिष्ठ करण० बहु० पु० तुम्हहि सारिष्ठ ४४

[करण० के उपर्युक्त दोनों कर्मों में अन्तर सामान्य और आध्यात्मिक कर्मों का है।]

—म्हाय संवत् बहु० पु० तुम्हा[य] वेत्त ४०

सर्वनाम : तृतीय पुंस्य [यस्य अतिरिक्त आत्मक सर्वनाम तथा संज्ञितवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं

वर्ता० (मूल) एक० स्त्री० स ३५, स ३६, स ३८, स ४१

स ४३, स ४३

कर्म० (विहित) नि एक० पु स्त्री० स ३५, स ३९, आन ४०

प्रत्ययमुक्त प्रयोगों की स्थिति विभिन्न कारणों में इस प्रकार है

—१ कर्ता १ कर्म० (मूल) एक० पु० स्त्री० सो ३ को ४३
कोव ३९ का ४५

—गह कर्ता० (मूल) बहु० पु० सागह ३

—२ वि० एक० स्त्री० का ४०

—३ वि० कर्ता० (मूल) एक० पु० एव २९, आन ३८
आन ४४ एह ३० एह ३९

—४ कर्ता० (मूल) एक पु० स्त्री० कोव ३६

—५ कर्ता० (विहित) एक० स्त्री० सेई ४३ सेई ४४

८	कती० (विहृत) बहु० पु०	रानी०	से ३१ से ३९ से
			३९, से ४० से ४१
८	कम० (विहृत) बहु० पु०	३२, से ३३ ४०	
-रु	कम० (विहृत) बहु० पु०	सेरु ३४	
-रु	सर्वथ एक० स्त्री०	सारु ३८	
-हिहि करत	" एक० पु०	सहि ३९, सहि करत	
		३५, सहि ४३	
-हि करत	" " "	सेहि करत ३५	
-रु	" एक० स्त्री०	सारु ४२	
-रु करी	" " "	सारु करी ३५	
-रु करी	" " "	सहि करी ४२	
८	" बहु० पु०	से ३९	
-रु	" " "	मारु ३१	
-रुहि	" " स्त्री०	मारुहि ३०	
-रुहि	अधिकरण० बहु० पु०	एहि ३४	

सर्वनाम : सर्वथ वाचक [तथा सर्वथवाचक विग्रहण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है

वि० एक० स्त्री० जा ३५, जा ४१ जा ४३ जा ४३ जा ४३

प्रत्ययबुद्ध प्रयोगों की विधि निम्नलिखित है

—१ सर्व० कम० (मूल) एक० पु० तथा बहु० स्त्री० जो ४१ जो ४५

—२ सर्व० कम० (विहृत) एक पु० जसु ४१

— ३ सर्व० कती० (मूल) तथा वि० बहु पु० ज ४० ज ४२

—४ सर्व० सकल० बहु० स्त्री० जहि ४४

सर्वनाम : अस्मत्वाचक [तथा अस्मत्वाचक विग्रहण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है

मैं कती० (मूल) एक० पु० को ३८ को ३८ को ४० को ८४

" कम० (मूल) " " जा ३२

प्रत्ययबुद्ध प्रयोगों के विधि निम्नलिखित है

८ सर्व० कती० (मूल) बहु० से ३४ से ३४

सर्वनाम : त्वत्वाचक [तथा त्वत्वाचक विग्रहण]

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्ययबुद्ध प्रयोगों की विधि निम्नलिखित है

— १ त्वत्वाचक वि० एक० पु० जा ४४ ४४

— २ त्वत्वाचक " " स्त्री० जा ४१ ४१

—बाह् सर्वव०वि० बहु० पु० आपबाह् २८
विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं

एक०अव० पु०=स्त्री जान ४ उंन १० एह् ४५, एत ४ विज
४१ सतावीस ३७ सब ४० साठ १८ सुवेस
४५, हुई १० हुई ११ निरी ४१ माकवी
२८ आठ २८

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है

— एक०अव० पु० एक २८, अठ २८ एतु ३ सुदेव ११
एतु १३ एह् १५, जानु ४४ अठ ४५
—उत्त एक०अव० पु० सारिखर २९, फिसर २९, मिसर २९, कर
१ ऊपर १०—इसर १० पुनर १० ठेकर
३ अइसर १० करर ११ अइसर १२
तइसर १२ अइसर १५, करर १३ मिसर
१३ कइसर १३ केसर १४ सुइसर १५,
अइसर १७ अइसर १९, अपसार ९, अ
[वसार] ३ १९, इप ४०

[— १। प्रत्यय का प्रयोग केवल ऐसे जगहों पर पु० विशेषणों के साथ हुआ है जो प्रत्यययुक्त विशेषणों के साथ स्वतः विशेष्य की भाँति जनना विशेष्य के अनन्तर आए हैं।]

— १) एक०स्त्री० कुमवी २९, कूवी १६, इसी १७ फिसी १८, इसी
४० अइसी ४२, पीरी ४३ साम्मली ४३ सिहू
री ४३ पाटनी ४३ इसी ४५, माकवी २८

— २) बहु पु करे ११

— ३) बहु पु पीछा १२, ऊजला १२ तरछा १२, बिना
१३ बिना १५, उमावा १५, पहुँला १७
ऊँचा १७ बादुला १७ पीछा १७ बिना १७

— ४) एक (विहृत) पु० उपहल्ले ओकई १५

[इस प्रत्यय का प्रयोग विशेषण का विहृत रूप बनाने के लिए किया गया है।]

— ५) —हि एक०अव० पु०=स्त्री० कटीहि १० नवई नानाई ११
सबई लकनाई १४ एहि १४ बादुसाई ४२,
ऊँजसाई ४२, [सा]नई पाकई ४६

[—होहि का प्रयोग सर्वत्र कारक के विषयों के साथ सर्वत्र कारक प्रत्यय के रूप में हुआ है।]
क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जाती है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

- अहं प्र० पु० एक० पु० अग्रहण १६
- अहं तु० पु० एक० पु० स्त्री० भूमि २८ काम २९ भाव २९
- भाव २९ भाव ३० भूमि ३२, भूमि ३० सज ३६
- अहं ३६ भाव ३७ भाव ३७ कर ३८ कर ३८
- भाव ३९ बह ४० बह ४१ भाव ४१ भाव ४२
- भाव ४२ काम ४५
- इ तु० पु० एक० पु० भाषि २९ भाषि ३४
- अवि त पु० बहु० पु० भाषि ३५ भाषि ३५
- अहि त पु० बहु० पु० पदहि ३४ भा [व] हि ३८ पदहि ३८
- भावहि ४०

क्रिया समावर्तार्थ वर्तमान :

- अहं प्र० पु० एक० पु० अग्रहण १६
- अहं तु० पु० एक० पु० स्त्री० काम २८ भा [स] ३ २९
- हण ३९ भाव ४१ भूमि ४४ भूमि ४५ पद ४५
- भूमि ४५ कव ४५

क्रिया सामान्य भूत और भूत इत्यर्थ :

- अहं तु० पु० एक० पु० सामान्य भूत भूत ३४ भूत ३९
- अहं त पु० एक० पु० सामान्य भूत अतिभूत ३१ भाषि
- अहं ३४ भूत ४०
- अहं तु० पु० एक० पु० भूत इत्यर्थ भूत ३९ अतिभूत ३९
- ३१ भाषिभूत ३१ भूत ३१

- ईत तु० पु० एक० पु० भूत इत्यर्थ भूत २९, भूत ३१
- इत तु० एक० पु० भूत इत्यर्थ भूत ४२
- इत तु० एक० पु० सामान्य भूत भूत ३१
- इत तु० एक० पु० सामान्य भूत भूत ३१ पदहिमा ३२

- इमा इमा तु० पु० बहु० पु० भूत इत्यर्थ पदहिमा ३४ [व] नि [मा]
- ४२ पदहिमा ४१
- इ तु० पु० एक० स्त्री० सामान्य भूत अग्रही ४१ स्त्री १
- स्त्री ४४

- इ तु० एक० स्त्री० भूत इत्यर्थ स्त्री ३५, स्त्री ३६ अ
- ३७ भाषि ३७ पदहि ४०

[धामाय्य मृत अक० क्रियाओं के बचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सन्० कर्म के अनुसार है।]

या धामाय्य अभिव्यक्त :

—इमी तु पु० एक० पु० करिखी ३२

क्रिया : पूर्वकालिक कृष्णत :

—अ एक० बहु० देव ११ वर १४ देव १९, बोट ४०

—आई " " छेदि १५, आई १७

—इठ एक बहु० करिठ १९, देविठ १०, पाविठ १२, कादिठ १३, पाविठ १३, लूतिठ १६, करिठ १९, जाविठ ४५

— " बहु कीएं ११

क : वर्तमान कृष्णत

—अति १० पु० एक स्त्री० मानति १

—अंतु १० पु० बहु० पु० आरंतु २८

—अति १० पु० बहु स्त्री० आवति ४४

क्रिया : भविष्यत् कृष्णत

—इकर तु० पु० एक पु० छोदि कर ४०

क्रिया द्विवि

—अर तु० पु० एक० बहु० पु० बीलर ४१, वर ४१, मर ४१

क्रियार्थक संज्ञा :

—अप पु० एक० पु० मुच १५

—इवा संज्ञा स्त्री० बहु० अपाधिये करी १४

अप्यर्था की स्थिति नीच दी जा रही है।

अप्यय : स्वानुसूचक :

— तह ११, तह १८, तह १८, तह १८, तह १९

— छही २८

— इठ २९

अप्यय : कालानुसूचक :

प्रपयहीन अवाही १९

— पुम २८, पुम १९, पुम ४१

अप्यय स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

राजस वस और उसकी भाषा : रचना के शब्द रूप

अध्याय : कार्यप्रणाली सूचक :

— एवं ४०

अध्याय : संयोजक

व	व १६, व १६, व ४०
वर	वर ४४
वि	वि २६, वि ३८
व	व २८, व ३६, व ३८
वपु	वपु ११ [व]पु १६ वपु १७

अध्याय : निवेश सूचक :

न न १० न १४ नही ४०
—नज नज १२

अध्याय : निराकरण बुझता तथा सूचक :

—	नजपु ४१
दिही	दि २८ नही ४० ही ४१
द	क्रोद ११ ठ १७ ठ ४०
वि	वि ११
गु	गु १० गु ११ गु ११
ह	मजरा १० पुड १८
ह	ह २८ ह ११
ही	सही १६ नही १६ ही ४१

अध्याय : संयोजन सूचक :

रे । अरे	एव० पु०	रे ४१ अरे ४०
हो	वपु पु०	हो ४१ हो ४१
र	एव पु	र १४ र १७ र १७ र ४०
		र ४२, र ४१ र ४१ र ४१

अध्याय : परिभाषा सूचक :

नति नति ४४

अध्याय : अन्त सूचक :

वि वि ४१
वरा वरा ११
रा—५

राज्य वेध और उसकी

[सामान्य मृत अकर्मियों के बचाव और तिन प
कर्म के अनुसार है।]

या : सामान्य मरिष्य

—इसी १० पु० एक पु० करि

क्रिया : पूर्वकालिक हस्त

—अ एक १३ पु० ३३ प

—इ ३३ प

—इ ३३ प

— ३३ प

क वर्तमान कृत

—अति १० पु० एक पु० स्त्री

—अति १० पु० बहु पु०

—अति १० पु० बहु स्त्री

क्रिया : मरिष्य हस्त

—अक १० पु० एक पु०

क्रिया : विधि

—अ १० पु० एक पु०

क्रियायक संज्ञा :

—अ १० पु० एक पु०

—इ ३३ प

अथवा की स्थिति नीचे दी जा रही

अथवा : अथवा

— ३३ प

— ३३ प

— ३३ प

अथवा : अथवा

— ३३ प

— ३३ प

अथवा : अथवा

— ३३ प

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

राजस वेस की मापा रचना के शब्द रूपों की स्थिति

६७

- ११ (१) संज्ञा : वयस्कारक (विभूत रूप)
एक० पु० प्रायपहीनता उ० सर्वेष० ५२
५५ म० उक्ति० ५१. १।
१४ (१) एक० पु० -३ व० तगारे ८१ बी।
१५ (१) बहु० पु० -३ व० ५० म० तगारे ८४ बी।
१६ (१) संज्ञा : वयस्कारक (भूत रूप)
एक० पु० प्रायपहीनता व पु० ५० तगारे ८०
बी १५ बी उ० अवाच्य म
सर्वेष० ५२ ५४ म० उक्ति०
५१. २।
१७ (१ २ ५ ६) एक० स्त्री० प्रायपहीनता व पु० ५० तगारे
८७ ८९ बी ९८ बी। उ० सर्वेष०
५४ ५६ म० उक्ति० ५१. २।
१८ (१ २ ३ ४ ५ ६) एक० पु० अवाच्य म - व० ५० तगारे ८०
बी उ० सर्वेष० ५२ म०
उक्ति० ५१. २।
१९ (५ ६) एक० पु० अवाच्य म - उ० व ५ तगारे
८० बी उ० सर्वेष० ५१ म०
उक्ति० ५१. २।
२० (१) बहु० पु० प्रायपहीनता व० पु० ५० तगारे
८४ बी उ० अवाच्य म सर्वेष०
५२ म० उक्ति० ५१. १।
२१ (४) बहु० स्त्री० प्रायपहीनता व० पु० ५० तगारे
८७ ९३ बी ९९ बी उ० सर्वेष०
५४ ५६ म० उक्ति० ५१. १।
२२ (१) बहु० पु० - पु० तगारे ८४ बी म०
उक्ति० ५१. २।
२३ (२ ५) संज्ञा : वयस्कारक (विभूत रूप)
एक० पु० -हि म० उक्ति० ५१. ७।
२४ (१) एक० स्त्री० -हि म० उक्ति० ५१. ७।
२५ (१ १) बहु० पु० स्त्री -हि म० उक्ति० ५१. ७।
२६ (१) बहु० पु० - व० पु० ५० तगारे ८४ बी।
२७ (५) बहु० पु० - (पु० म० -) उक्ति० ५१. २।
२८ (१ ४ ५) बहु० पु० - व० पु० म० तगारे ८४ बी।
२९ (४ ५ ६) बहु० स्त्री० - म० उक्ति० ५१. २।

४ रचना के शब्द-रूपों की विभिन्न अपभ्रंशों में स्थिति

अमरसंख्या के अर्न्तर्गत कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ रचना के अंशों की हैं। १ से लेकर ६ तक की संख्याएँ रचना के छ लक्षितियों की हैं, ७ की संख्या रचना के आदि-अन्त की है।

जोडा : कर्ताकारक (भूल रूप)

- | | | |
|-------------|---------------|---|
| १ (१२३४५६) | एक पु० | प्रत्ययहीनता ५० पु० ४ त्तारे ८ की ९५ की १ उ० सविद्य ५२ ५५ मपु० उक्ति ५९ १। |
| २ (१२३४५६७) | एक स्त्री | प्रत्ययहीनता ५० पु० ४ त्तारे ८ की ९८ की उ० सविद्य ५४ ५६ की मपु० उक्ति ५९ १। |
| ३ (१२३४५६) | एक पु | अकारान्त में — ५० पु० ४ त्तारे ८ की मपु० उक्ति ५९ १। उ० सविद्य ५२। |
| ४ (१४५६) | एक पु | अकारान्त में — ५० पु० ४ त्तारे ८ की उ० सविद्य ५१। |
| ५ (२३४५६) | बहु पु | प्रत्ययहीनता ५ पु० ४ त्तारे ८ की ९६ की उ० अकारान्त में सविद्य ५२ मपु० उक्ति ५९ १। |
| ६ (२६) | बहु स्त्री० | प्रत्ययहीनता ५ पु० ४ त्तारे ८ की ९१ की ९९ की उ० अकारान्त में सविद्य ५४ मपु० उक्ति ५९ १। |
| ७ (२५) | बहु पु० — | पु० ४० त्तारे ८ की ९९ की मपु० उक्ति ५९ १। |
| ८ (३५) | बहु पु | — ५ पु० त्तारे ८ की ९१ की ९९ की उ० अकारान्त में सविद्य ५४ मपु० उक्ति ५९ १। |
| ९ (३) | बहु पु | — १। |
| १० (४ ६) | बहु पु | अकारान्त में — ५ पु० ४ त्तारे ८ की ९९ की उ० अकारान्त में सविद्य ५४ मपु० उक्ति ५९ १। |
| ११ (३) | बहु स्त्री | अकारान्त में — ५ पु० ४ त्तारे ८ की ९९ की उ० अकारान्त में सविद्य ५४ मपु० उक्ति ५९ १। |
| १२ (५) | बहु स्त्री० — | मपु० उक्ति ५९ १। |

४८. (१५)

४९. (१)

५०-५१ (५)

५२ (५)

५३ (५)

५४ (५)

५५ (५)

५६ (५)

५७ (२)

५८ (३)

५९ (५५)

६० (५)

६१ (५)

६२ (५५)

६३-६४ (५)

६५ (५)

६६ (५५)

६७ (१)

६८. (१२, १५, १६)

६९. (१५, १६)

७० (५)

७१ (११५)

७२ (१५)

७३ (१५, १६)

एक०।बहु०।पु०।स्त्री० - नृ मयू० उक्ति० ५९.४।
एक० पु० - नृ प० तपारे ८१वीं ९५ वीं ३।

एक० पु० - २ - २२।

एक० पु० कर मयू० उक्ति० ५९.४।

एक पु० कर (गुल० कर मयू० उक्ति० ५९.४)

एक० पु० कर (गुल० कर मयू० उक्ति० ५९.४)

एक० पु० कर (गुल० कर मयू० उक्ति० ५९.४)

एक स्त्री० - नृषि-नृषी।

एक० स्त्री० - नृषी।

एक० पु० स्त्री० - नृ।

एक० स्त्री० केरि प० द० तपारे १०३।

एक० स्त्री० करी मयू० उक्ति० ५९.४

बहु० पु० - २।

बहु० पु० करगकयह (गुल० करमयू० उक्ति० ५९.४)

बहु० पु० - २।

बहु० स्त्री० करी मयू० उक्ति० ५९.४।

बहु० स्त्री० - नृ (गुल० प० - नृ तपारे ९१वीं) मयू० उक्ति० ५९.७।

लता : अविष्करण कारक

एक० पु०। स्त्री० प्रत्ययहीनता उ० मदेग०
५१ वीं ५३ ५४ मयू० अकाराण्य उक्ति० ५९.५।

एक०।बहु०।पु०।स्त्री० - मयू० उक्ति० ५९.५।

एक पु०।स्त्री० - नृ प० तपारे ८२ वीं ८३
९१ वीं ९५ वीं ९८ वीं उ० मदेग० स्त्री० ३

इकाराण्य मे ५६ मयू० उक्ति० ५९.७।

एक० पु० अकाराण्य - नृ प० द० तपारे ८१ वीं
उ० मदेग० ५४।

एक० पु० - २।

एक० पु० - नृ-नृ प० अकाराण्य म तपारे
८२ वीं उ० मदेग० ५० ५४ ५५ मयू०
उक्ति० ५९.५।

संज्ञा : करण कारक

- १ (१७) एक० पु० — य पु० तयारे ८१ बी ९
बी ९, मपु० उक्ति० ५९. ३ ।
- ११ (४) एक० पु० — ।
- १२ (४) एक०पु० अकारान्त में — य य०पु०व० तयारे
८१बी उ० उक्ति० ५२ ।
- १३ (५) एक०पु०त्वत्वी० — मपु० अकारान्त में उक्ति०
५९ ३ ।
- १४-१५ (१) एक०पु०अकारान्त में —ई अई य० तयारे ८१ बी ।
- १६ (१) एक०पु० —ई छहुं (तुल० मपु०—सउउक्ति १ १) ।
१७. (४) एक०त्वत्वी —हि उ० उक्ति० ५४ ५९ मपु०
उक्ति० ५९ ३ ५९. ७ ।
- १८ (१) बहु०पु० —हि य० व० तयारे ८५बी ९६बी
उ० उक्ति० ५२ मपु० उक्ति० ५९ ३ ५९. ७ ।

संज्ञा : सम्प्रदान कारक

१९. (४) बहु०पु० — ।

संज्ञा : अवादान कारक

- २० (४) एक०पु०—ई (तुल०य० करण० —ई तयारे ८१ बी) ।
- २१ (१) एक० पु० सर्व ।

संज्ञा : संबंध कारक

- ४२ (१३४५६) एक०त्वत्वी पु० त्वत्वी (अ) समास प्राचीन
तथा मध्य भारतीय भाषा भाषा से आगत ।
(आ) प्रत्ययहीनया य०पु०व० तयारे ८१बी ८६बी ८७
९८बी उ० उक्ति० ५९ बी १ ५४ ५५ ।
- ४३ (२४६७) एक०त्वत्वी पु० त्वत्वी —ह य० तयारे ८३ बी
८६ बी ८७ ९१ ९३ बी ३ ९५ बी ३ ९६ बी ।
- ४४ (४९) एक०त्वत्वी पु० केरा य०व० तयारे १ ३ ।
४५. (२४६९) एक०पु०त्वत्वी० —हि त्वत्वी य० व० तयारे ८३ बी
८७ ९१बी ९८बी उ० उक्ति० ५१ ए. ५१ ।
- ४६ (७) एक पु० —इ ।
- ४७ (२९) एक पु० त्वत्वी —ह य०पु० व० तयारे ८३बी ८७ ९१
९५ बी ३, ९८बी उ० उक्ति० ५१ ए. ५२ ५४ ।

सर्वनाम द्वितीय पुङ्गव

- ९३ (४५) वत्सो (मूल) एव पु० प्रत्ययहीनता तु। तु
(गुण० मयू० तु उक्ति० ६६ २)।
- ९४ (९) वत्सो (मूल) एव पु० -हृ गृहृ य० व तपा
१२० बी।
- ९५ (२) वत्सो (विहित) एव वत्सो० -हृ गृहृ य०
उक्ति० ६६ २।
- ९६ (९) वत्सो (विहित) वत्सो पु० प्रत्ययहीनता तुम्ह ५०
तपा १२० बी मयू० उक्ति० ६६ २।
- ९७ (५) वत्सो एव पु० -ई ई ई य० तपा १२०
बी मयू० उक्ति० ६६ २।
- ९८ (९) वत्सो एव पु० -ई ई ई वत्सो
९९ (२) वत्सो एव वत्सो० -सवि तुम्ह।
- १०० (९) वत्सो वत्सो पु० -ई गतिम्ह तुम्ह ई गतिम्ह
(गुण० गतिम्ह-उ० मदेन ७१)।
- १०१ (२) वत्सो एव पु० -ई ई पु० तपा १२० बी।
- १०२ (९) वत्सो वत्सो पु० -नरा तुम्हारा।

सर्वनाम : तृतीय पुङ्गव तथा अनिश्चय वाचक

- १०३ (१) सर्वो वत्सो मूल एव वत्सो० -ई (गुण ५ इति
तपा १२५ तथा उ० इति मदेन ५८)।
- १०४ (११४५, ९७) सर्वो वत्सो वत्सो (मूलाविहित) एव पु०। वत्सो १
मा व पु० व० लो तपा १२३ ए, उ०
उ० मदेन ५८ म मयू उक्ति ६६ ३।
- १०५ (२५६) सर्वो वत्सो (मूल) एव पु०। वत्सो को
(गुण० उ० अनिश्चय वा मदेन ५९ ए,
मया मयू० उक्ति० ६६ ९)।
- १०६ (१) सर्वो वत्सो (मूल) एव पु० वत्सो -उक्ति
६६ ३।
- १०७ (९) वत्सो पु० वत्सो० -ई का उ० मदेन ५ बी।
- १०८ (२) सर्वो वत्सो (मूल)। वत्सो (विहित) एव पु० वत्सो०
-ई ते पु० तपा १२३ ए।
- १०९ (१६) सर्वो वत्सो (मूल) वत्सो वि० एव पु० -
मयू (गुण० व० व० मयू मदेन ११०)।
- ११० (९७) वत्सो वत्सो व० तपा १२४ ए उ० मदेन ५८।

- ७४ (२) एक पु० -हिं स० छरेस० ५२।
 ७५ (२५७) : एक पु० - पु० त्तारे ८९ बी मपू० ३
 ५९ ५।
 ७६ (१) एक पु० -ई प० त्तारे ८९ बी।
 ७७ (१५) एक पु० - प० पु० व त्तारे ८२ बी
 बी ४ मपू० छक्ति० ५९. ५।
 ७८ (४६) एक पु० -उ।
 ७९ (१३४५६) बहु० पु० स्त्री० -हिंही प० त्तारे ८५ बी
 ९१ बी२, ९६ बी ९९ बी मपू० ३
 ५९ ७।
 ८० (५) बहु पु० स्त्री० -हु मपू० छक्ति ५८
 ८१ (१) बहु पु० प्रत्ययहीनता व छरेस० ५२, ५५ म
 छक्ति० ५९ ५।
 ८२ (४) बहु पु० -हु।
 ८३ (२) बहु पु० अकारान्त में -हिं प० त्तारे
 बी स० छरेस० ५२।

समा : संबोधन कारक

- ८४ (२५६) एक पु० स्त्री० प्रत्ययहीनता प० पु० द० त्तारे
 बी ८७ ८९ बी ९५ बी १ ९८।
 उ अकारान्त में छरेस० ५२ मपू०
 छक्ति ६२।
 ८५ (१४) एक पु० अकारान्त में - प० त्तारे ८ बी
 ८६ (५) एक पु० -।
 ८७ (२) एक पु० - -।
 ८८ (५) एक पु० - १।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष

- ८९ (१५) कर्म० (निष्ठ) एक पु० -हिं हि मोहि। मोहि
 मपू० छक्ति० ६६ १।
 ९० (१) संबन्ध बहु पु० -महं अम्हारहं।
 ९१ (५) संबन्ध बहु पु० -अम्हारे (तुल० मपू० अम्हार -छक्ति
 ६६ १)।
 ९२ (६) संबन्ध बहु स्त्री -अरह अम्हारह (तुल० मपू०
 अम्हार छक्ति० ६६ १)।

सर्वनाम द्वितीय पुंस्य

- ९३ (४५) वती० (पुं०) एक पु० अत्यन्तहीनता तु० तु
(तुल० मनु० तु उचित १६ २) ।
- ९४ (६) वती (पुं०) एक० पु० -ह तुर्ह व० व० नमारे
१२ वी० ।
- ९५ (२) वय० (विभ०) एक० वती० -हो लोही मय
उचित० १६ ३।
- ९६ (१) वय० (विभ०) बहु० पु० अत्यन्तहीनता तुल० व०
उपारे १२० वी० मय० उचित० १६ २।
- ९७ (५) वय० एक० पु० -ह तुर्ह व० उपारे १२०
वी० मय० उचित० १६ २ ।
- ९८ (१) वय० एक० पु० -ह तुर्ह व० मय०
९९ (३) वय० एक वती० -सवि तुल० वी० ।
- १०० (६) वय० बहु० पु० -ह वी० तुल० वी० मय०
(तुल० मय० व० -ह वी० ३३) ।
- १०१ (३) वय० एक० पु० -ह वी० तुल० वी० मय०
१०२ (६) वय० बहु० पु० -ह वी० तुल० वी० मय०

सर्वनाम तृतीय पुंस्य तथा अनिश्चय वाचक

- १०३ (३) वय० वती० मय० एक० वती० -ह तुल० वी० मय०
उपारे १२५ वी० उचित० वी० ५८) ।
- १०४ (११४५६७) वय० वती० मय० (तुल० वी० मय०) वी०
वी० व वी० मय० वी० उपारे १२३ वी० उचित०
उ मय० ५८ व मय० उचित० १६ ३ ।
- १०५ (२५६) वय० वती० (पुं०) एक पु० वती० वी०
(तुल० वी० अत्यन्तहीनता वी० मय० ५० वी०
मय० मय० उचित० १६ १) ।
- १०६ (१) वय० वती० (पुं०) एक० पु० वी० -ह वी०
१६ ३ ।
- १०७ (६) वी० तुल० वी० -ह वी० उ वी० ५० वी० ।
- १०८ (२) वय० वती० (पुं०) एक० पु० वी० -ह वी०
-ह वी० तुल० वी० मय० १२३ वी० ।
- १०९ (१६) वय० वती० (पुं०) एक० वी० एक० पु० -ह
मय० (तुल० वी० मय० वी० मय० १३०) ।
- ११० (६३) वय० वती० वी० मय० १२४ वी० मय० ५८ ।

- ७४ (२) एक० पु० - हि उ० सवि० ५२।
 ७५ (२, ५७) : एक पु० - पू० त्वारे ८२ बी मपू० उक्ति०
 ५९ ५।
 ७६ (६) एक० पु० - ई प त्वारे ८२ बी।
 ७७ (३५) एक० पु० - प० पू० इ त्वारे ८२ बी ९५
 बी ४ मपू० उक्ति० ५९ ५।
 ७८ (४९) एक० पु० - उ।
 ७९ (१३४५९) बहु० पु०। त्वी० - हिाही० प० त्वारे ८५ बी ८७,
 ९३ बी८ ९६ बी ९९ बी मपू० उक्ति
 ५९ ७।
 ८० (५) बहु पु०। त्वी० - नु मपू० उक्ति० ५८।
 ८१ (३) बहु० पु० प्रत्ययहीनता उ० सवि० ५२, ५५ मपू०
 उक्ति० ५९ ५।
 ८२ (४) बहु पु० - ई।
 ८३ (२) बहु० पु० अकारान्त में - हि प० त्वारे ८५
 बी उ० सवि० ५२।

संज्ञा संशोध्य कारक

- ८४ (२, ५, ९) एक० पु०। त्वी० प्रत्ययहीनता प० पू० इ० त्वारे ८०
 बी ८७ ८९ बी ९५ बी ९ ९८ बी
 उ० अकारान्त में सवि० ५२ मपू०
 उक्ति० ५२।
 ८५ (३४) एक० पु० अकारान्त में - प० त्वारे ८० बी।
 ८६ (५) एक पु० - ।
 ८७ (२) एक० पु० - ।
 ८८ (५) एक पु० - ।
 सर्वमानः प्रथम पुण्य
 ८९ (१५) कर्म० (विहित) एक० पु० - हिा हि मोहि। मोहि
 मपू० उक्ति० ५९ १।
 ९० (३) सर्व० बहु० पु० - नमः अम्हारः।
 ९१ (५) सर्व० बहु० पु० - अम्हारे (तुल० मपू० अम्हार - उक्ति०
 ५९ १)।
 ९२ (६) सर्व० बहु० त्वी० - नरः अम्हारः (तुल० मपू०
 अम्हार उक्ति० ५९ १)।

सर्वनाम द्वितीय पुरुष

- ९३ (४५) वहाँ० (पुरु०) एक पुरु० प्रत्ययहीनता गु० गु०
(गुण० मयू० गु० उक्ति० ९९ २) ।
- ९४ (१) वहाँ० (पुरु०) एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की ।
- ९५ (२) वहाँ० (पुरु०) एकपुरु० -हूँ तुम्हें मयू०
उक्ति० ९९ २।
- ९६ (१) वहाँ० (पुरु०) एकपुरु० प्रत्ययहीनता गु० गु०
सगरे १२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- ९७ (५) वहाँ० एक० पुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया० १२०
की मयू० उक्ति० ९९ २ ।
- ९८ (१) वहाँ० एक० पुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- ९९ (२) वहाँ० एक० पुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०० (१) वहाँ० एक० पुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०१ (२) वहाँ० एक० पुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०२ (१) वहाँ० एक० पुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।

सर्वनाम : तृतीय पुरुष तथा अनिश्चित वाक्य

- १०३ (३) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०४ (१ २ ४ ५ ६ ७) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०५ (२ ५ ६) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०६ (१) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०७ (१) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०८ (२) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- १०९ (१ २) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।
- ११० (१ २) वहाँ० वहाँ० मयू० एकपुरु० -हूँ तुम्हें व० व० जया०
१२० की मयू० उक्ति० ९९ २।

- १११ (३६) सर्व०कर्त्ता० (मूल) कर्त्तव्य वि०एक० । बहु०पु०—एव
प०पु०ब० तयारे १२४ए उ० सर्वेष्ट० ५८ ब ।
- ११२ (५) सर्व०कर्त्ता० (मूल) कर्म० (विहृत) बहु०स्त्री —न्या ।
- ११३ (३४) वही सा प० तयारे १२३ ए६ उ० सर्वेष्ट० ५८ ए ।
- ११४ (६) वही वा ।
- ११५ (५६) सर्व०कर्त्ता० (मूल) एक०स्त्री अत्यवहीमता स प०
तयारे १२३ ए ६ ।
- ११६ (५) वही एह प० ब० तयारे १२४ ए ३ उ० सर्वेष्ट ५८ ए ।
- ११७ (६) सर्व कर्त्ता० (विहृत) एक०स्त्री —ई तेई मपू०
उक्ति० ६६ ३ ।
- ११८ (२९) सर्व कर्त्ता० (मूल) बहु० पु० —नह साह ।
- ११९ (४५६) सर्व कर्त्ता० (मूल) कर्म० (विहृत) तथा वि०बहु पु० ।
स्त्री —ते प०ब० तयारे १२३ ए ५
उ० सर्वेष्ट० ५८ ए मपू०उक्ति० ६६ ३ ।
- १२० (६) सर्व कर्त्ता० (विहृत) बहु०स्त्री० —ते प० तयारे
१२३ ए ५ ।
- १२१ (५६) सर्व०कर्म० (विहृत) वि०एक पु० स्त्री० अत्यवहीमता ऋ
पु० पु० तयारे १२३ ए ४ ।
- १२२ (१५६) वही ज्ञानः (गुल० प पु० ब० कर्म तयारे १३०) ।
- १२३ (१) सर्व०कर्म (विहृत) एक०स्त्री० —हि ताहि मपू०
उक्ति० ६६ ३ ।
- १२४ (६) सर्व कर्म० (विहृत) बहु० —ह तेह ।
- १२५ (३) सर्व०कर्म० (विहृत) बहु पु० —हि जानहि (गुल० संज्ञा
कर्म०(विहृत)—हि मपू० उक्ति० ५९ २) ।
- १२६ (२४) सर्व०कर्म० (विहृत) तथा वि० बहु० पु० —ते ।
- १२७ (२) सर्व करण० एक० पु० —हवा तेहवा ।
- १२८ (२) सर्व० करण० बहु० पु० —हवे तेहवे ।
- १२९ (५) सर्व संबंध० एक पु० —नरत सारत ।
- १३० (५) सर्व० संबंध० एक० पु० —नरे तारे ।
- १३१ (५) सर्व० संबंध० एक० पु० —नरि तारि ।
- १३२ (५) सर्व संबंध० एक०स्त्री० ग्री वग्री ।
- १३३ (६) सर्व० संबंध० एक पु० —हि तहि प तयारे १२३ ए ४ ।
- १३४ (६) वही —हि करत तहि करत ।
- १३५ (६) वही —हि करत तेहि करत ।
- १३६ (६) सर्व०संबंध० एक०स्त्री० —ह ताह प० तयारे १२३ ए ६ ।

११७. (१) बही -हि करी तहि करी ।
 ११८. (१) बही -हि करी ताहि करी ।
 ११९. (१५) सर्व०मर्ष०एक०रत्ना० - तामासु ताम । तामु ८०
 तमारे १२३ ए १ (गुल०उ०उत्तम तथा तमु
 मदेय० ५८ अ)।
 १४०. (४) बही - मु तमु प० तमारे १२३ ए १।
 १४१. (१) सर्व०मर्ष०एक०रत्ना० - तदि तापटि मयू० उत्ति०
 १६३ ।
 १४२. (१) गव०मर्ष०बहु० पु० - न ।
 १४३. (१) गव०मर्ष०बहु० पु० - नहि माग्राहं ।
 १४४. (१) गव०मर्ष०बहु० स्त्री० - नहि माग्रीहि ।
 १४५. (१) सर्व० अवि० बहु० पु० - हि एहि (गुल० बहु०रत्नी
 प० तमारे १२४ ए१ १२५ ए३)

सर्वनाम : सर्ववशाच्च [तथा सर्ववशाच्च विग्रह]

१४६. (५,६) सर्व० तथा वि० एव० पु०।स्त्री० प्रत्ययहीनता न ।
 १४७. (११) वि० एव० पु०।स्त्री० - न जा प० ८ स्त्रीनिम-
 तमारे १२६ ए २ ।
 १४८. (१२,१४ ५९७) सर्व०रत्नी (गुल) ताम (गुल) तथा वि० एव०
 पु०। स्त्री - न जी प०१०८ पु० मे तमारे
 १२६ ए १ उ०गन्ग०५८वी मयू० उत्ति०१६ अ
 १४९. (११) सर्व०रत्नी (विग्रह) एक०पु० - गुजगु उ मदेय०
 ५८ बी।
 १५०. (२) वि० एव०स्त्री० - न
 १५१. (४५,६) सर्व० रत्नी०(गुल)तथा वि० एव० पु०।स्त्री० - न प०
 ८० तमारे १२६ ए १ मयू० उत्ति० १६५।
 १५२. (१) गव०मर्ष०बहु० स्त्री० - हि तदि ।
 १५३. (११) सर्व० अवि० वि० एक० पु० - हि तदि प० ८०
 तमारे १२६ ए १ ।

सर्वनाम : प्रत्यवशाच्च [तथा प्रत्यवशाच्च विग्रह]

१५४. (२५,६) सर्व० रत्नी० (गुल) । रत्नी० (गुल) एव पु०।स्त्री०
 प्रत्ययहीनता की व नु ८ तमारे १२७ ए३
 उ० मदेय० ५९ ए मयू० उत्ति० १६५।
 १५५. (१) सर्व०रत्नी० (गुल) एव पु० वा।

१५६ (३६)	सर्व कर्म (मूल) एक पु० प्रत्ययहीनता काहं प०ब० मपु० तगारे १२७ ए ३।
१५७ (५)	सर्व कर्ता (मूल) एक पु० — काहु।
१५८ (२)	वि० एक पु० — ना।
१५९ (६)	सर्व करण० एक पु० — के (तुल० केहं मपु० उक्ति० ६९९)।
१६० (३)	सर्व-संबन्ध एक स्त्री०-मु काहु प पु ६० तगारे १२७ ए ३।
१६१ (३)	वही—मुठनी कासुठनी प०ब० तगारे १०४।

सर्वनाम निष्प्रवाचक [तथा निष्प्रवाचक विशेषण]

१६२ (७)	सर्व-संबन्ध एक पु० —मु आपणु (तुल० आपणु केहं मपु० उक्ति० ६९८)।
१६३ (६)	सर्व संबन्ध तथा वि एक पु० —बाह आपणह (तुल० मपु० आपण उक्ति ६९८)
१६४ (५६)	सर्व संबन्ध तथा वि एक स्त्री —बी आपनी मपु० उक्ति० ६९८।
१६५ (६)	सर्व संबन्ध तथा वि-बहु पु० —बाह आपबाह।

पुलनाचक विशेषण

१६६ (१२३४५६)	एक-बहु पु०-स्त्री० प्रत्ययहीनता मपु० उक्ति ६७।
१६७ (६७)	एक-बहु पु० स्त्री० —ही-हि विशेष्य वा कारक-प्रत्यय।
१६८ (१२३४५६)	एक-बहु पु० — मपु० उक्ति ६७।
१६९ (१३५६)	एक-बहु पु० —डाऊ।
१७० (४६)	एक-बहु पु० (विभक्त) — मपु० उक्ति० ६७।
१७१ (२४५)	एक पु० ।।
१७२ (५)	एक पु० —ी।
१७३ (५)	एक पु० —र।
१७४ (१२३४५६७)	एका स्त्री० —ी मपु० उक्ति ६४।
१७५ (३५)	बहु पु०-स्त्री — मपु० उक्ति० ६४।
१७६ (५६)	बहु पु० — मपु० उक्ति ६४।
१७७ (३४६)	बहु पु० —।

राष्ट्र बेल की भाषा : रचना क राष्ट्र रूपों की स्थिति

७५

क्रिया : सामान्य वर्तमान काल

- १७८ (१) प्र० पु० एक० पु० -अनु (गुण० व० पु० एव० -अनु रचना प० पु० -अनु तगार ११६ बी) ।
 हि० पु० एक० पु० -अति व पु० नगार ११६ बी उ० मदेग० ६ मयू० उक्ति० ७१ ।
 १७९ (२५) डि० पु० एव० पु० -अहिप० द० तगारे ११६ बी उ० मदेग० ६० ।
 १८० (४) न० पु० एक० वदु० पु० -अ मयू० एव० उक्ति० ७१ ।
 १८१ (४५) न० पु० एव० पु० गत्री० -अद व० पु० द० तगार ११६ बी उ० मदेग० ६२ मयू० उक्ति० ७१ ।
 १८२ (१२१४५६७) न० पु० एव० पु० गत्री० -द भावि मयू० उक्ति० ७१ ।
 १८३ (३५६) न० पु० एव० पु० गत्री० -अति मयू० उक्ति० ७१ ।
 १८४ (१) न० पु० वदु० पु० गत्री० -अहि व० नगारे ११६ बी (गुण० द० -अहिप० वही) उ० मदेग० ६०
 १८५ (२,३४६) न० पु० वदु० पु० -अति (गुण० - अति व द तगार ११६ बी) ।
 १८६ (१५६) न० पु० वदु० पु० -अ
 १८७ (२) क्रिया लकारार्थ वर्तमानकाल
 १८८ (६) प्र० पु० एव० पु० -अनु (गु० सामान्य व० पु० -अनु व पु० नगारे ११६ बी) ।
 १८९ (४) डि० पु० एव० पु० -अनु ।
 १९० (१२५६) न० पु० एव० पु० गत्री० -अद (गुण० सामान्य व० पु० द० नगारे ११६ बी) ।
 १९१ (४) न० पु० एव० वदु० पु० गत्री० -अद
 १९२ (४) (गुण० -अनु नगारे १४१) ।
 १९३ (१५) वही ददु० व नगारे १४१ उ० मदेग० ७१ ।
 १९४ (२) वही ददु० (गुण० -अनु मयू० उक्ति० ७२) ।
 १९५ (३५) न० पु० वदु० पु० -अ ।
 १९६ (४) न० पु० वदु० पु० -अद (गुण० सामान्य व० पु० द० नगारे ११६ बी) ।
 १९७ (५) न० पु० वदु० पु० -अ ।

श्रिया सामान्यभूत काल [और भूत काल]

- १९० (१) वृ० पु० एक० पु० भूतकाल - अत उ सवि० १७।
- १९८ (१५६) वृ पु एक० पु० भूतकाल - अत ५ पु त्वारे
१४८ बी उ० सवि० १७।
- १९९ (५९) वृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत - अत उ सवि० १७।
- २ (५६) वृ पु० एक० पु० भूतकाल - अत ५० पु० त्वारे
१४८ बी उ० सवि० १७।
- २०१ (१९) वृ० पु० एक० पु० भूतकाल - ईत ।
- २०२ (४) वृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत - ऊ ।
- २०३ (४) वृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत - बी ।
- २०४ (५) वृ पु एक० पु० काल - एत ।
- २५ (५) वृ० पु० एक० पु० भूतकाल - एत ।
- २६ (५) वृ० पु० एक० पु० भूतकाल - अत ।
- २७ (५) वृ पु० एक० पु० भूतकाल - अत (तुल० पु० अत ।
त्वारे १४८ बी) ।
- २८ (५) वृ पु० एक० पु० भूतकाल - अत ।
- २०९ (५) वही - एत ।
- २१ (६) वृ० पु० एक० पु० भूतकाल - अत ५० पु० त्वारे
१४८ बी (तुल० उ० पूर्वकालिक - अत सवि०
१८) ।
- २११ (६) वृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत - अत ५० पु० त्वारे
१४८ बी (तुल० उ० पूर्वकालिक - अत
सवि० १८) ।
- २१२ (२) वृ० पु० भूतकाल बहु० पु० - अत ५ पु २ त्वारे
१४८ बी उ० सवि० १७ मयू० उक्ति० ७५।
- २१३ (४५) वृ० पु० बहु० पु० सामान्यभूत - ए मयू० उक्ति० ७५।
- २१४ (५) वृ पु० बहु० पु० भूतकाल - ए मयू० उक्ति० ७५।
- २१५ (५) वृ० पु० बहु० पु० भूतकाल - एत ।
- २१६ (६) वृ० पु० बहु० पु० सामान्यभूत - अत (तुल० पु० अत ।
त्वारे १४८ बी) ।
- २१७ (६) वृ० पु० बहु० पु० भूतकाल - अत । अत (तुल० पु०

राष्ट्रिय वेतन की मापा : रचना के राज्य रूपों की स्थिति

७७

- २१८ (१) इकाय तगारे १४८।
 वृ० पु० एक० स्त्री० सामान्यमूल -ई प० पू० तगारे १४८बी, उ० संदेश० १७ मपू० उचित० ७५।
 २१९ (२, १९७) वृ० पु० एक० स्त्री० मूलदृश्य -ई प० पू० तगारे १४८बी उ० संदेश० १७ मपू० उचित० ७५।
 २२० (५) वृ० पु० एक० स्त्री० सामान्यमूल -अ उ० संदेश० १७, मपू० उचित० ७५।

- २२१ (१) क्रिया : सामान्य बहिष्कृत काल
 वृ० पु० एक० पु० -स्त्री (गुल० प० -इकाय तगारे ११९ बी)।

- क्रिया : पूर्णकालिक इकाय
 २२२ (२४९) एक बहू० - अ मपू० उचित ८०।
 २२३ (४५९) एक० बहू० - इ प० पू० तगारे १५१ बी; उ० संदेश० १८ मपू० उचित० ८०।
 २२४ (१) बही -ई पु० तगारे १५१ बी।
 २२५ (१५९) एक० बहू० - मपू० उचित० ८२।
 २२६ (१) एक० बहू० -इ उ० संदेश० १५१ बी; उ० संदेश० १८।

- क्रिया : वर्तमान इकाय
 २२७ (२१५) इ० पु० एक० पु० स्त्री० -अपु।
 २२८ (२७) वृ० पु० एक० पु० - अ मपू० उचित ७८८०।
 २२९ (४९) वृ० पु० एक० स्त्री० -अपि मपू० उचित ८१।
 २३० (१) वृ० पु० एक० पु० -अपु व० तगारे १४० ए उ० संदेश० १४ (गुल० मपू० उचित० ७८)।
 २३१ (१५) वृ० पु० बहू० पु० - अ मपू० उ० संदेश० १४ मपू० उचित० ७८ ८०।
 २३२ (४) वृ० पु० बहू० पु० -अ।
 २३३ (१) वृ० पु० बहू० स्त्री० -अपि व० तगारे १४३ ए, उ० संदेश० १४।

- क्रिया : बहिष्कृत इकाय
 २३४ (१) वृ० पु० एक० पु० -इ का।

क्रिया : विधि

२३५ (२३५९) क्रि० पु० लृ० पु० एक० लृ० पु० = -अउ प० व० तगारे १३८ बी उ० लृ० पु० में सदिश० ९१, मपू० उक्ति० ७४।

२३६ (३४५) द्वि० पु० लृ० पु० एक० पु० = -उ प० पु० व० तगारे १३८ बी उ० क्रि० पु० में सदिश० ९१; मपू० उक्ति० ७४।

क्रियार्थक लक्षा

२३७ (१) एक पु० = अग प पु० तगारे १५० बी; उ० सदिश ९१; मपू० उक्ति० ८१।

२३८ (२) एक० पु० = एवउ प० व० तगारे १४९ बी, उ० एवउ सदिश० ७०।

२३९ (३) एक० पु० = हवा ।

अव्यय स्वात्मसुचक

२४० (५) कउ, ऊगउ, ऊमरं प्रत्ययहीनता ।

२४१ (२, ३४) एकु, लेनु - प० व० तगारे १५१ बी; मपू० वनु उक्ति० ९८।

२४२ (१९७) जहं तहं उ० तहं सदिश० ७४।

२४३ (६) इहं - मपू० उक्ति० ९८।

२४४ (६) इउ :- ।

अव्यय : कालसुचक

२४५ (६) वन प्रत्ययहीनता मपू० : उक्ति० ९८ ।

२४६ (३) वं - उ० सदिश० ७४।

२४७ (६) पुनु - (तुल्य कार्यप्रवाही सुचक पुनु : प० पु० व० : तगारे १५१ बी) उ० सदिश० ७४ मपू० उक्ति० ८९ ।

अव्यय : स्थिति सुचक

२४८ (३) पर प्रत्ययहीनता प० सदिश ७४ ।

राष्ट्रपति की भाषा : रचना के राष्ट्र-रूपों की स्थिति ७९

अध्यय कार्यप्रणाली सूचक ।

एवं - संस्कृत तत्त्वमसा
 कर्मो - (गुण० मयू० ६०) उक्ति० ६८ ।
 जेम्ब सेम्ब - व प० ६० जेम्ब जेम्ब सेम्ब
 सेम्ब तपारे १५३ सी; उ० जेम्ब सेम्ब मदेय०
 ७४; मयू० जेम्ब सेम्ब उक्ति० ६८ ।

२४१ (५९)
 २५० (५)
 २५१ (७)

अध्यय : संघीयक

पर प्रत्ययहीनता उ० मदि० ७७
 कि " मयू उक्ति० ८९।
 न त " मयू उक्ति० ८९ ।
 न - उ० मदेय० ७७
 न - (गुण० ५ ६० नः तपारे १५३ सी -
 उ० न मदेय० ७४) ।
 ननु मयू उ० प० ननु तपारे १५३ सी-
 उ० मदेय० ७७।

२५२ (६)
 २५३ (६)
 २५४ (५९)
 २५५ (१)
 २५६ (४)
 २५७ (२५६)

ननु - प० तपारे १५४ ।
 जो - ।
 ननि - प० तपारे १५३ सी।
 नत ।

२५८ (१)
 २५९ (१५)
 २६० (५)
 २६१ (१)

अध्यय निवेदनसूचक

न। प्रत्ययहीनता न प० ५०६० में तपारे
 १५३ सी; न तपारे ७४; न मयू० में उक्ति० ८० ।

२६२ (१५९)

न ही ।
 नत - उ० ५० तपारे १५३ सी।
 ना - ।

२६३ (६)
 २६४ (१६)
 २६५ (२)

अध्यय : निवेदन एवं सुझावसूचक

हि ही प्रत्ययहीनता मयू० उक्ति० ८९।
 ए प्रत्ययहीनता ।

२६६ (५९)
 २६७ (५)
 २६८ (११४५९)

इ प्रत्ययहीनता ५० तपारे १५३ सी उ० मदि०
 ७४, मयू० उक्ति० ८९।

२६९ (४)	मि प्रत्ययहीनता ।
२७० (४५६)	पु प्रत्ययहीनता ।
२७१ (४६)	—हिाही (तुल० मपू० —हि उक्ति० ८९) ।
२७२ (१३९)	अउ (तुल० मपू० —उ उक्ति० ८९) ।
२७३ (२)	उव (बही) ।
२७४ (२४६)	— (तुल० मपू० —उ उक्ति० ८९) ।
२७५ (६)	हूँ । हूँ
२७६ (३५६)	हूँ प० ब० तगारे १५३ डी।
२७७ (२)	निब प्रत्ययहीनता (तुल० निब प० ब० तगारे १५३ डी) उ उक्ति० ७४।
२७८ (२६)	बीबि प० ब० तगारे १५३ डी।

अध्यय : संदीप्त लुचक

२७९ (५९)	एक० पु० रे प्रत्ययहीनता प्राचीन भारतीय आर्य भाषा से प्राप्त तगारे १५५।
२८० (९)	एक० पु० र प० तगारे १५५।
२८१ (५९)	एक० पु० अरे प्रत्ययहीनता प०पू० ब० तगारे १५५ मपू० उक्ति० ८९।
२८२ (९)	बहु० पु० हो प्रत्ययहीनता ।

अध्यय : बरिमाचलुचक

२८३-२८४ (१३९)	अवि भुट प्रत्ययहीनता ।
२८५ (१)	मपू, मपू — ।
२८६ (१५)	मिपू — प०पू० ब० तगारे १५३ डी ।

अध्यय प्रसन्न लुचक

२८७ (१२५९)	कि प्रत्ययहीनता मपू० उक्ति० ९६-९।
२८८ (५)	की " बही
२८९ (६)	कहा — ।

५. रचना का सप्त भाषात्मक रूप

ऊपर के अध्ययन को देखने से ज्ञात हुआ कि कुल २८९ शब्द-रूप रचना में पाए हैं। इनमें से १२ विधायक हैं। विधायकों के सबसे अधिकतर कहा गया है कि तीनों विवेचन—यहाँ लगाए सदिश० तथा उचित० में उनके विवेचन में विस्तार-वैयर्थ्य है। इसी प्रकार ७८ रूप ऐसे हैं जो उक्त तीन शब्दों में नहीं मिलते हैं। इन १२+७८ = ९० रूपों को निकाल देने पर विभिन्न अवयवों और औपचारिक भाषाओं के रूपों की विधायि रचना में विन्मलित्व है —

कुल	प०	पू०	द०	उ०	मयू०
१९९	१०९	५९	७१	७५	१११

अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रचना में सर्वाधिक बाहुल्य प० तथा मयू० के रूपों का है।

विभिन्न अंशों में इन रूपों की स्थिति निम्नलिखित है —

अंश	कुल रूप	प०	पू०	द०	उ०	मयू०
१	१२	१०	१४	१७	१७	२०
२	४०	२७	१	२३	२६	२८
३	५०	३८	२२	२८	२५	२७
४	४२	३१	१६	२६	२६	२६
५	७९	४५	३१	३८	३४	५७
६	१२०	७३	४२	४८	५३	६९
७	१८	१०	७	५	८	१०
योग	३७४	२४३	१५१	१८५	१८९	२३७

इन विवरणों से भी हम स्पष्ट की पुष्टि होती है कि प० तथा मयू० के रूपों का अनुपात रचना में बहुत बड़ा है क्योंकि समान विन्मलित्व रूपों की संख्या अधिक है। प० के रूपों का बाहुल्य हमेशा की ओर बढ़ता जा रहा है एक सर्वसाधारण सर्वोच्चतम मान्यता बन गई थी। मयू० की वह स्थिति नहीं थी। वह एक औपचारिक भाषा मात्र थी। हमेशा उनके रूपों के अधिकार का एक मात्र कारण यही माना जाता है कि रचना मयू० के किसी शब्द में की गई और यही की भाषा को रचना की सामान्य भाषा के रूप में ग्रहण किया गया। वेचन विभिन्न अवयवों में दोहराने जाने के लिए आवश्यकता की आवश्यकता के अनुसार समान्य प्रयोगों की औपचारिक भाषा के रूप में भी प्रयोग हुआ। एक बात यहाँ बतानी चाहिए है कि मयू० के अन्तर्गत अनेक रूपों का

न प० में पाए गए हैं और न उन अपभ्रंशों में मिलने श्रेष्ठों से विभिन्न नक्षत्रियों की मापिकाएँ आई हैं।

प्रथम नक्षत्रिण के प्राप्त अंशों में मापिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं आता है। इसमें विभिन्न अपभ्रंशों में प्राप्त व्याकरण-रूपों का योय क्रमशः है मपु० ए० प० १९ इ० १७ उ० १७ पु० १४। इसके जो व्याकरण-रूप किसी अपभ्रंश में नहीं मिलते वे निम्नलिखित हैं

संज्ञा कर्ता० (मूक) बहु पु० - १

संज्ञा मधि० एक० पु० -

तुल्य० वि एक बहु पु० - उ । ऊ

ये रूप कदाचित् बर्णित मापिका की औचित्य मापा से लिए गए हैं। - १ और - उ । ऊ प्रत्यय परिवर्ती हिन्दी के हैं, इसलिए इस नक्षत्रिण की मापिका परिवर्ती हिन्दी प्रदेश की बात होती है।

द्वितीय नक्षत्रिण के प्राप्त अंशों में भी मापिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं आता है। इसमें आये हुए विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण-रूपों का योय क्रमशः है मपु० २८ प० २७ उ० २६ इ २३ पु १९। इसमें आए हुए निम्नलिखित व्याकरण-रूप ऐसे हैं जो किसी अपभ्रंश में नहीं मिलते हैं

संज्ञा संबंध० एक० स्त्री०

(-हूँ) वि (-हूँ) भी

सर्व० द्वि० पु करण एक स्त्री तुल्य वि

(-स) वि ।

सर्व० कर्म (विकृत) तथा वि० बहु० पु० में

- ।

सर्व० ए० पु० करण एक पु० तैहवा

(-हूँ) वा ।

सर्व० ए० पु० करण बहु० पु० तैहवें

(-हूँ) वें ।

संबंधवाचक वि० एक० स्त्री० जो

- ।

प्रत्ययवाचक वि० एक० स्त्री० वा

- ।

क्रिया सामान्य कर्त० ए० पु० बहु पु०

- ।

क्रिया सामान्य कर्त० ए० पु० बहु पु०

- ।

क्रिया सामान्य मधि ए० पु० एक० पु०

- ।

इनमें आए हुए प्रत्यय - वा और उसके विभिन्न रूपों से तथा प्रत्ययवाचक वि० एक० पु० वा से यह प्रकट है कि नक्षत्रिण की मापा मराठी का ही कोई पुच्छा रूप है। अपने इतिवृत्ति अपभ्रंश के निरूपण का आधार डॉ० तगारे ने ऐसी अपभ्रंश रचनाओं की बनाया है जो महाराष्ट्र प्रदेश में रची गयी थीं और ये रूप इन रचनाओं में नहीं आते हैं इसलिए यह प्रकट है कि तृतीय नक्षत्रिण की रचना से कवि ने उत्कालीन औचित्य मराठी की सहायता ली है।

चौथी नक्षत्रिण के भी प्राप्त अंशों में मापिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं

है। उसमें जाने वाले विभिन्न अवयवों के व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है प० १८
 २० २८, म० २७ उ० २५, पू० २२। तृतीय मर्यादा के ऐसे व्याकरण-रूप
 जो इनमें नहीं आते हैं निम्नलिखित हैं —

संज्ञा कर्ता० (मूल) बहु० पु०	—ई ।
संज्ञा संबंध० एक० स्त्री०	—एषी ।
सर्व० प्र० पु० संबंध० बहु० पु० अग्रहाण्ड	—अग्र० ।
सर्व० तु० पु० कर्म (विहित) बहु० पु० जानहि	—हि ।
निवचन मुख्य अर्थ या	— ।

— ११वीं तथा —आषड् प्रत्ययों से यह भाषा पुछनी परिवर्ती छत्रपाती तथा
 पुत्रपाती के निवट दिगार्द पड़ती है। य० के ये रूप नहीं मिलते हैं। इसलिए ऐसा आठ
 होता है कि तृतीय मर्यादा में बरि से सरासीन औपिक पुछनी परिवर्ती छत्रपाती
 और पुत्रपाती के रूपों का घुट देने का प्रयास किया है।

चतुर्थ मर्यादा का विषय एक टविरची भाषिका है जो उ० अवयव राख
 की है। इनमें प्राप्त व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है प० ११ म० २६ २० २६
 उ० २६ पू० १६। इस में यह दर्शनीय है कि य० के अवयव उ० का योग २० तथा
 म० के बराबर ही है।

पंचम मर्यादा का विषय एक बीड़ी भाषिका है जो पू० अवयव राख
 की है। किन्तु इस मर्यादा में विभिन्न अवयवों के व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः
 है म० ५७ य० ४५, उ० ३८ उ० ३४ पू० ३१। इस मर्यादा में यह
 दर्शनीय है कि पू० के रूपों का योग सबसे कम है और सबसे अधिक योग म०
 के रूपों का है।

षष्ठ मर्यादा की भाषिकाई आलसी है। इस मर्यादा में विभिन्न अवयवों का
 योग जाने वाले व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है प० ७३ म० ६९, उ० ५१
 २० ४९, पू० ४३। आलसी की अवयवों को अपूर्व विचारण में ही० लगाने का आचार
 पर य० के अवयव राख दिया है। किन्तु यही भी म० के रूपों का योग य० के अवयव
 बराबर ही है। यह दर्शनीय है।

आदि-अंत में विभिन्न अवयवों के रूपों का योग क्रमशः है म० १० य० १०
 उ० ८ पू० ७ २० ५, जिसमें यह संभावना और भी स्पष्ट हो जाती है कि बरि से
 रचना की सामान्य भाषा के लिए म० के विभिन्न रूपों को चुना जा।

अतः हमने देखा है कि शिष्टाचार और से प्राप्त हुआ भाषा भाषा है और
 यही हम देखते हैं कि रचना म० के विभिन्न रूपों का प्रयोग की गई है। हमने यह भी
 देखा है कि रचना के औपिक रूप उसको इतिहासिक रूप में आने है और यही हम देखते
 हैं कि विभिन्न अवयवों की भाषिकाओं का मर्यादा बर्तन करने में उक्त प्रयोगों का उपयोग
 का व्यवहार अपनी सीमित जानकारी पर करने हुए यही बरि को अवयव भाषा होने
 है म० तथा य० के रूपों का प्रयोग कहने में कहा है। पंचम और षष्ठ मर्यादा

राज्य वेद और उसकी भाषा

इसके सबसे प्रबल उदाहरण है। प० के रूपों का अधिकता से मिलना इस कारण भी संभव है कि यह एक व्यापक साहित्यिक माध्यम के रूप में ही प्रयुक्त हो रही थी। इसलिये मयू० के मयू प्राब औक्तिक भाषा के रूप में ही प्रयुक्त हो रही थी। इसलिये मयू० के रूपों का इतनी ही बहुतायत से मिलना जिसकी बहुतायत से प० के मिलते हैं यह प्रमाणित करता है कि रचना और संबन्ध रचयिता का मयू० से अधिक निकट का सम्बन्ध था। फलतः रचना मूलतः दक्षिण कोसल की बात होती है, जो दक्षिण की नायिकाओं के मात्मी होने तथा कदाचित् बार के राजकुल से उनके संबंधित होने के कारण कभी बार में उत्कीर्ण करके किसी मयू में समाई गई। इसके विपरीत यदि यह रचना मूलतः मालवा में निर्मित की गई होती तो इसमें मयू० की इतनी प्रमुखता न प्राप्त होती जिसकी उसको हुई है।

इस प्रश्न में यह भी वर्तनीय है कि रचयिता की बसाधारण सहजबुद्धि ही नहीं एक प्रकार से उसका पक्षपात भी मालवी नायिकाओं के साथ है जिसका लक्ष्यिक यह सबसे अधिक बढ़ा-बढ़ा कर दिखावा की १८ पंक्तियों में करता है जब कि दोष प्रवेशों की नायिकाओं के लक्षितों का भीतत उसके दिखाई से भी कम केवल ५ पंक्तियों में। हो सकता है कि इसीलिए और भी यह काव्य बार में उत्कीर्ण करा कर किसी मंदिर में लगाया गया हो।

फलतः प्रस्तुत लेखक का मत है कि रचना सामान्य रूप से दक्षिण कोसली में रची गई थी जिसमें नायिकाओं की प्रादेशिकता के अनुसार उनकी औक्तिक बोलियों के कुछ तत्व रखे गए थे। रचना का आदि-अंत दक्षिण कोसली में है और मसिधियों में क्रमशः पश्चिमी हिन्दी तराई पुरानी पश्चिमी राजस्थानी जयवा बुजराही टंकिली सीढ़ी तथा मालवी के तत्व हैं, वही रचना का उच्च भाषात्मक रूप है, जिसकी और उसके रचयिता ने

[सा] उन्हें भावार्थ बढ़ा दी जानी। (४६)

कह कर खिंच दिया है।

राउलषेल
(पाठ)

[१][५] मय तिथ (ये) [५] ॥
 रोडे (ये) राजत बेल बरामा (बी) ।
 बर --- इ मारणु न [५] ॥
 का (बी) बरम जायत ली तमय बरामा ।
 हाते (ले) लीते (ले) राजत राजत ॥

----- [१] ----- [२] बा[ल]उ बायत ॥
 बाजिहि बाजल तरलत बीजत । [का]उत तुणत चुन --- बर ॥
 बहव संवीले मय मय राजत । लीह वैड कवि जाल --- [५] ॥
 ----- [१] --- [२] पुष --- ल तमयही मोहिनि ॥
 जाला कांठी पलत पुहावड । जामु कि --- इ तारति [पा] बर ॥
 एहड तारविहू मारणु पाकत । बंजणु रुचड ली ----- [५] ॥
 ----- [१] --- [२] ली ल --- पांकीज ॥
 राजत कबमर मति तुत बायत । बायत बायत --- इ बायत ॥
 - पुहा पदिरणु जालत बायत । लामु लीह कि कछडा पोष [५] ॥
 ----- [१] ----- [२] [५] मय मय --- ॥
 विन बाहुरवो बी बायेणु लीह । जाम बर लीह मोहि मति कोह ॥
 बर[ली] बंदिवा बायत बायत । लीह कि मतिमर बीजत बायत ॥

[॥ • ॥ • ॥ • ॥]

----- [१] --- [२] हुं बेलन [५] --- ल देसति ॥
 बलिजहि बाज निजहि म बायिम् । ली बायतु को --- ली (२) बायिम् ॥
 - लहि जाणु बं विजहल कूलो । जणत तात कि लीह बं बीरलो ॥
 ----- [१] --- [२] का [५] छहि मोह ॥
 का[नि]हि बजिबनहुं कि क पय । ली बी(वि)बायणुं जालि बाय ॥
 - लकि कांठी कांतिहि लीह । लीह ली विडि बाय --- ली मोह ॥
 बायिहि ली --- [१] ----- [२] --- ल ॥
 बरिह [५] कांति मोहा जाडा । [का]निपु बाय ली लुव बाडा ॥
 बायिण बायडा ली जाडा । जामिपु बायणु [५] बाडा ॥
 हाविहि रोडे बरम जाह । ली पुडि लाम बायिण लाम ॥

१ कोणको को ही हुई मरणादि विचारने ली चरित्रकी ली है जो इन पाद में
 उल्लेख आया है वही ली है ।

----- पाड़ी पाड़ी । जगु काग्रे [९] ----- ली माड़ी ॥
 पाइहि पाइसिया निब चाया । लोचनि आनि [क] माड़ी भाषा ॥
 मोरखे बा[न]विब पुसनि हेतु । आनि क तेह जा तो बिस ॥
 जा बस मन हुसितो मेडी सांजह । ते आपुसी गम्हारिम्ब भास [१०] इ ॥
 अइसी - - - तबनिम्ब माड़ी । पातली को बाजब छाडी ॥
 - - - कवि नइसी राजस सो [ही] । बेसत तोही मयमूर्ख मोही ॥

॥ • ॥ • ॥

पुठु कालीबड का इतर सांजह । हेतु अम्हापड वा बड देस [११] इ ॥
 बाउंडंड को राउ [क छी] हइ । बड नड सो पुव कोचकु न मोहइ ॥
 उहरउ बाबिहि काज [ल] बीनड । को बाबड सो बड नड बानड ॥
 करडिम्ब जगु काबडिजड कागहि । काई करेबड सोहहि जा [१२] नहि ॥
 मसइ पुवकी म[ावड?] लाठी । कानु तबी छहुर इन डिडी ॥
 लाबज- लाबड कावू रास[उ] । कोकु न बैसतु करइ उमसतड ॥
 बनहि सो ऊंचड किमड राजस । तबवा बोवस करइ सो बाउस ॥
 बाह [१३] डिजड सो म्वासड बीहउ । [म्वास] उ आनि न ठुं जगु बाहउ ॥
 [हा] बहि नासिजड कुल सोहहि । [ते] वू जूता जव तपडइ बाहहि ॥
 पहिरन कछुरे नर सीहइ । राजस बीसतु तड जव मोहइ ॥
 मुनिनंडरा [१४] की काग मुहावड । मरी (?) एक-कानु न बावड ॥
 हांसगइ जा बाउसि मइसी । सा बापार बहू राजस कहसी ॥
 बहि परे नइसी मोलम नइसइ । त पब राजस नइसड बीसइ ॥

॥ • ॥ • ॥ • ॥

[१५] केहा देसिपुपु तुठं लाबहि । अ - - - इ केह तुठं आल[हि] ॥
 केहु एवहु सो पुव बसिबडइ । [को?] अवलवहं होमा बिजडइ ॥
 बड्डा केह वपु जो बडा । सो प्यर तेहा मोरी सडा ॥
 बड साबाबा डीहा किम्यइ । बें महुं [१६] एरकेबनि पंडिम्बइ ॥
 अंघिहि कम्पल उहरा दित्त । बी [नि]हासि करि बवनू मता ॥
 कम्पडिजहि सोहहि बुड गप । म(न)कन लंडन उहि नरे-जम ॥
 कंडी कडि बलासी सीहइ । एहा तेहा तड जगु मोह [१७] इ ॥
 बाबूपाडे बबहि जो कंयू । सी सम्राट् अवंग ही न - ॥
 [क] य् विम्यवहि बबब बीसहि । ते निहासि तब बरवु उबीसहि ॥
 मोरइ अगि बेरया कंयू । लंसहि जोहहि न लंजड, इ ॥
 पहिरन पापरीहि जो केरा । कछ [१८] डा बछडा उहि नर इतरा ॥
 तुवना सि क - इला व[हि] र वू । बासई बाजड बावड तनु जगु ॥

रावण बेल और उसकी भाषा

पीर तुम्हें एक की पत्नी मउर वर क [रि?]
 को तई तई बई बोलइ।
 न पुनू मातमी उबेतु हि भावतु
 काम्बदेउ जाउं मायनाह हविमार तु भूतइ।
 इही मन्हार [२९] इ कुनवी जीव करिउ बयसइ।
 तहि सारिजउ कहा इउं जावि एउ कि तई[त]इ।
 जीपहि अमरि सोचउहउ बीनउ धानु तें कितउ भावइ।
 बिसउ सिद्धिरिउउ रजायसु काम्बदेवह करउ भावइ।
 बि [३०] तानु रतु-ऊरउ पुनूनाह न साह-ऊरुं ऊनउ।
 सो बेकिउ जाउमिहि करउ जी[त]इ इतउ जावइ।
 केर एह मोहिमउ बूनउ ठेकउ।
 मउह हं र बुई तु करीहि साहूहि जाउहूँ जाविहि करई पुनई
 न [३१] इतउ काम्ब करउ [न]पुनू बडाविपउ।
 निवालि डीकें तु करे कीए तें काम्बह म-य-
 संकरी हि जाविहि करउ काम्ब वाविपउ।
 साहूहूँ पुनूहूँ नाहु तु करउ गुरेसु।
 सीहर बागहूँ सवहूँ अतरिउउ [३२] अइतउ करिउ तुहूँ (?) सैसु।
 जाहिउ फाटा सीका ऊनका तरका ते बालि जीव इ[ही?] बूनइ।
 तइउउ हविमार जाविउ काम्बदेउ बचही काई करिती
 अइतउ गृहस्पति ही नउ नू(सु?)अइ।

:३] जाविहि र तु करउ काम्ब बीनउ कहउउ।

नू बालुतु करई भयई कियउ — — — बिसउ।

गेवहि करउ बाहु जाविउ हरिनु पावइ पाविउ

: कपोल जिता जिता।

बेक तई [३४] सवहूँ तवनाहूँ

गिबिबे करी अचुतई बस बस पवहि हिमा।

रजाहूँ कामही जा[न?]इ करउ बूडउ बीनु।

ओ केतउ न खविमउ एहि अमी(मि?) जावि न बीनु।

हर पवहिपु पावहि[३५]न जिता भाववि।

ेनु पुनिव हि पुनिव हि करा जाह कीइई तहि करउ

उवउ बीनु गुनव का[न] खेडि बजाया भाववि।

इ करइ तलि तई उपवहूँ ओठई लकवि ओहूँ लावी।

बीवी कतई(?)न[३६]बालहूँ अमी[न]पसवहूँ तें सुतिउ बिलवी।

इहाइ कम नुह करी सोम तमइ

इ न [बह?] नू हरइ त उवनाहूँ करहूँ।

बुबि आपनी अण्ड स कूडी बागनी
 त। (१) ह करी करिउ तहीं अबहरुं ।
 [३०] त एकाबलि -- इ एक बाणी तइ र इती भावइ
 बनु मुह बंदु भीतय बहू नयत बान सताबीस
 हा -- री आई अइतउ भावइ ।
 बच र पतुला ऊंचा बामुला बीचा
 सोबाहू कर मयस कलत जिता भा [३८] बहि ।
 आमु कि काम्बदेबहू कराहू बरहू
 बारि ओठ छाल लोहू बाबहि ।
 तिवलिहि बीसि रीवरइ स बिचो बरइ ।
 अ लोहूहि करइ पावइ पुठू आपहू जूस तहू निबाउउ करइ ।
 तहू मांडजू छाल [३९] -- उ मुचाचि हू
 बीती हू करउ एहु जि हाथ ।
 स लोहू बैस तहू अइतउ भावइ
 अमलारउ अ[मलार]उ हुअउ एहु संसार ।
 स पुन अबहूी तें हावही बावही बइहिआ लोणा केरा बूरा ।
 स बैसि [४०] पुन्हा [४१] अ बैस ते सब बाबहि बूरा ।
 तो रत (स) इती ओठ बाही बडि करी पइहूी अ काबुली
 छड र आम लोहू बचि बरइ ।
 अरे काम्बदेबई सनाहु बिपउ
 त एब पुन्हा नही छोडि कउ इतउ तिहु [४२] [बन?] ही बरइ ॥
 बइहबहू निरी बइहिआहू बाउउई लहू अ लोहू
 त कि कउजू बेनु पावइ ।
 आ -- बन । -- बि बि अरे बीड ही बीसला ही
 बीतउ ओ बनू भावइ ॥
 तें पुनू -- -- -- डी एक आपलि ।
 [४२] -- १ ब ताहि बरी लोहू को काम्बइ ।
 अबाब तहू काम्बडूबहू आलबान बइनी भावइ ॥
 बावहि र रनुबल -- जिआ ।
 अ लोचहि लाछिहि बरउ निबागु बचिउ [४३] बि [आ] ॥
 -- -- -- बरतलई ऊंचा [४३] [ह]
 -- -- -- करी अ -- १ ।
 तहू र तबही बैसहू करी अ लाछि त अबहरी ॥
 बावइहि र करउ अ बीरी तहि निगु[री] हि बेनु ।
 अ काम्बानी तहि र बाटनी हि बरइ ।

मा - म - - - - - ह ।

को स लोम बर [४४] उ - - - - - काय तेई पर जायी ।

जहि भावति रति जायबह हिमह अति सुखु खूबी ॥

सुम्हई स - - - - - क सुम्हहि सरितउ बोलहि को बूझइ ।

म - - - - -

मा [४५] न - - - - - इ बालइ बी मनु काणहु पांस बूझइ ॥

एह इती सुबेस जहि जायउ नइसइ

- [४६] उछु बूझइ ।

अउर भावउ को क - - - - - हु स - - - - - कच [४७] इ [११]

॥ • ॥ • ॥ • ॥ • ॥

रीई राज्य बेल बजा [बी ।]

[सा]व्ह माव्ह बइती जायी ॥

एउ भितुवत - - - - - ।

- - - - - उ [१] हावें लीवें लोड [११]

- - - - - इ [४७] - - - - - [१]

म - - - - - १ - - - - - [११]

भाषान्तर

[१] [५] नमः शिवाय (३) म्य ॥
रोह के द्वारा राजसूय (राजकुल-विलास) नहीं गई
----- अपना जानकर ।

जो जिस प्रकार जाता है, वह उस प्रकार वर्णन करता है
राजा और राजा के हाथ-पीर के लिए ।

----- [१] ----- [२] भला भावा है ।
बाँलों में नामक ठरक सीधिए, अच्छा कुछ फूल ----- ।

जब राजकुल द्वारा बोझ-बोझ रख हो गया है [जो] कवि [कहता है] -----
अपनी ही घोषा होता है ।

----- [३] ----- की मोहते हैं ।
(उसके) गले में बालकटी^१ घोषा होती है क्या और कोई [आमरण] उसकी-----
पाता है ?

सबकी का मंडन हम प्रकार का भला है कि जिसकी कहे----- [१]
----- [१] ----- [४] ----- माहिए ।

रान [वर्ण का] कपूक मायधिक बंधा (अच्छा) है [और] ----- बंध पाड़ा (कम कर)
बंधा हुआ है ।

----- भला परिचय भाता है उसकी घोषा क्या कछड़ा या सवता है ?
----- [१] ----- [५] कुछ कुछ ----- ।

विना आमरण के बंध की जो घोषा है वहाँ अथ जो बंध है उन के मुझे मायन कोप
होता है ।

ऐसी बड़ी जिस घर में जावे उस [घर] की सुम्यता के क्या कोई [घर] का
सवता है ?

[॥ • ॥ • ॥ • ॥]

----- [१] ----- [६] ----- देगा है ।
तेज (विश-अपन) की बाँध तेजे की जो बंधिया (बनीहारा) हो रही है उनका
वर्णन करते हुए----- सग रहा है ।

गों के रूप में ----- जो बाँध (मयानक) अहि इन विचलित कुत्तों के पास है
[अच्छा] हो कि के लक्षण उनमें (विशों के) बाँधों ।

----- [१] ----- [७] मोह (घोषा) है ।
[रातो] के बहिर्दृष्ट की जो देखाएँ है के विनयनीय की बाँधी बाँध (साह)

[का विनय] है ।

१ कोटकी में ही हुई मकरार्ध शिवा तेज की वर्णन की है ।
२ एक बालीदार कंठाभरण ।
३ एक वर्णभरण ।

— — — — बंठ में जो कंठी घोमा ऐसी है वह जोक की वृष्टि की संज्ञित कर उसे धूम्य करती है।

भंगों में— — — — [१] — — — — — ।

पटी के [८] सुहर कंबुक और चाहर का जो बाका बर्न होता है, वह भी यहाँ पर चयित है।

[ठेरा] आबिल (मलिन) कछड़ा बुड़ और मयाङ है [और ठेरा] बांफ यौवन — — — स्तब्ध (बबिच्छ) है।

हापा में रिष्ट उरखल और लान्ह (छोटे) हैं और उनसे कचे हुए ही जो ठाये हैं वे आबिल (मलिन) हैं।

— — — — — बाड़ी पट्टी है मानो कामदेव [९] — — — सभाह मुक्त है।

[ठेरे] निरचम ही जगे (मले) पीरों में पावहुँधिका^४ है जिसने बंन में बांफा लावण्य मांड रक्खा है।

मास्त (मोरावरी अथ के निवासी) आनरिण [हीकर] गुञ्जते कहते हैं कि ठेरा वेव उनके [वेव] से बांफा है।

ए हूणि मंडी (नकटिया ?) क्या बल बाध कर [गुप्त] अंज ? बहुतो आपूर्ण घान्वता [ही] बटाता है।

[१] ऐसी — — — उरखता बांड़ी है, [ऐसी] पावली (पवले घरीर की लगी) को, हे बाई, किसने छोड़ा है ?

— — — — राउल (राजमवन) म तु ऐसी घोमित है कि तुझे देखते हुए मदन भी मोहित है।

॥ • ॥ • ॥ • ॥

वे कानोड (कर्नाट—उत्कल निवासी) क्या ऐसा है कि अंज यदि वे हमारे वेव को न देखें ?

[११] राउल जो तु आभिण्ड [संपूर्ण सरीर से] परिमित हो रही है, महां कोई ध्वनि नहीं है सो (जा) [तु ही] बटा मोहित न हो जाए।

[ठेरे] बांलों में जो उहर (अत्य) काजल रिया हुआ है [कवि की] जो [कुछ] बात है वह उरका बर्न (सबर्न) नहीं है।

[ठेरे] बांलों में करडिम^५ और कांचरिया^६ (?) है [अतः] अयों (अत्य आबरवी) को घोमा के लिए क्या कर्तव्य (करना) है ?

४—पीरों का एक घु बकवार भावप्रथ।

५—बरट या गहरावलों बाएकआमर नजीकानीमेसटका करपहुना जाता है।

६—एक प्रकार का वन्यामर्य (?) ।

- [१२] [तेरे] मछे में लोचनी कंठी जाती है, यह किस की मूछ मूछबा है?
 संवा [तेरा] लोचन और रस [बर्न का तेरा] कंकु है, तू [मने ही] न रहे,
 के देखते ही जगमग करते हैं।
- ए राइल को (को) [तू] अपने सखी को कंवा किए हुए है यह देखते हुए सखी को
 बावला कर देता है।
- [१३] [तेरी] को बाहे है के मस्त-भीत (दीवान) के अवष्टम्भन स्तंभ - के
 समान दीप है - - - - - मानो मस्त-भीत के अवष्टम्भन स्तंभ - भी उनके
 से नहीं है।
- [तेरे] मूछ (मसख किए हुए) हाथों की मुट्ठु घोमा को वहाँ पर समस्त माना जग
 चाहते हैं।
- [उरा] परिधान कच्छपने पर घोमा देता है, [और] राजभवन में वह [परिधान]
 बीनता हुआ सब जनों को मोहित करता है।
- [उमदी] मूछों की ध्वनि [१४] कानों में सुहाती है - - - - - निशको नहीं
 जाती है?
- निश हंन-मति से वह इस प्रकार बलती है, वह (हंनमति) बालर (यश बायी) भी
 राउल [की मति] की नहीं है।
- यह ही (?) घर में ऐसी स्त्री अबलमनता (सेवा) में प्रवेश करती है सब घर राउल
 (राज-अवन) जैसा बीछता है।

॥ • ॥ • ॥ • ॥

- [१५] ऐ टस्तिगुन (निर्मली का पुन-तलम) तू बीना है कि तू भी संतना है? —
 देन कि तू भी बहता है
- [तुममें से] एक की [एरी] देगी ती उमका यहाँ बर्न किया जाए [निमना बर्न
 करते] हों के हृदय भीमते (स्निग्ध होते) हैं।
- जो निमी प्रकार की बाबाओं के घर में बंवा उमने और बेरल उस प्रकार के ध्वनि
 के बारियों को प्राप्त किया।
- बंवा के सखे [कोई बंवा] दिनों के लिए भी यदि [निमिन] दिये जाएँ, ती
 हरे [१६] एक (बनेने) [हने] मूल से ही बंवा लिया जाए।
- बापा मे हंवा और बीपा बाबल है जिसे निहार कर मान भी बन [हा रहा] है।
 दोनों दण्ड बन्धनिया* के लोभा से रहे हैं [जिनके बाबल] दण्ड बंन-मदन
 (बादि ?) दण्ड हो चुके हैं।

कंठ में जो बलाटी (बलकार बेल की) कंठी खोमिष्ठ है, वह ऐसे-वैसे सब बातों को मोहित करती है।

[१७] बाबू उबाड़े स्तनों पर जो कंचुक है, वह मानी अनन्य का सन्नाह हो रहा है। कंचुक के बीच में जो स्तन दिखाई पड़ते हैं, उन्हें निहार कर [बोप] सब वस्तुओं की उपेक्षा करते हैं।

गोरे अंग पर दोरेगा कंचुक [ऐसा लपटा] है। मानी लम्बा और स्पोस्तना का संवम हुआ है।

बाबूरे का जो परिचाय है [१८] [उसको देख कर] हठर कछड़ा और बछड़ा [पलेका] बन्ग हो जाते हैं।

यह परिचाय ऐसा है। मानी कचका [एक] पक्ष से [दूसरे] पक्ष में बीड़ जाता हो।”

देखो इस प्रकार के टेम्स (चिह्नों) के स्वाभाविक बचन हैं [उसके] अन्त सान्द्र (स्निग्ध) बोल तो बन्ग हो जाते हैं।

[उप-बचन में] प्रवेश करती हुई इस प्रकार की टक्किनी खोमा दे रही है और इसको निहार कर लोग [बाबू] मक-मक कर [१९] देख रहे हैं।

॥ • ॥ • ॥ • ॥

ए. नंदिन (नंदि) पूँछा है कि पूँछ की कहना है? ऐ राहु (पश्चिम कैप बाके) [इसके] आगे [के अंशों में] बर्चन करते हुए भूल रहा है।

तेरे द्वारा क्या नहीं वे बेप देखे गए हैं अथवा जैसे-वैसे ही ऐ बृष्ट [इनका] पूँछ बर्चन कर रहा है?

जो बीड़ मुवर्न (सुवेस) होते हैं तेरे द्वारा वे कहाँ देखे गये? [उन्हें] देखने के अनंतर क्या तुम [अन्य] बेप पीठे लमते हैं?

[२०] बंभनों (?) से बंभे हुए [उस बेप के] केशों में जो रम्यता होती है क्या एक ही अन्य बेप की ओपावली उसकी बराबरी कर पाती है?

जों के ऊपर [बंभा हुआ] बायेक (बायीक) कंठा [लम्बता] है कि मानी एह के हाथ पृथ्वी रवि वीसा हो।

[उसकी] दृष्टि के फूक [अब] हमारे माध्यसध्य में फूकते (विकसित होने) हैं— उन्हें देख कर समस्त वस्त्र बन्ग मोहित हो जाते हैं।”

[उसके दृष्टि-मुष्प को देखकर] फूक गुछ हो गए और तारे मन में [२१] हार गए मानी [इसी कारण] तारे रजनी-मुस गिने जाते हैं।

भाषान्तर

बरे बर्बर [बंदी] दू प्यास से रैख उसकी लताटिका के लपुन बना है?
 बरे बर्बर [बंदी] दू रैख [उसकी] मोहो रैखी करी (गुम्बर) है वे कामरेब के
 बनुष की बहुरी येसी है।
 बरे बरे बर्बर [बंदी] दू [उसके] तिकक को गही देखता है? यह [मानो]
 [२२] बंदीमा के ऊपर टीका हुई है।
 [उसका] बर्बुल टीका किस प्रकार का था है कि [मानो] मुस-यधि की बबलमता
 (सेवा) में—नमित होता हो।
 बिना बगबारे (पनबारे)^१ को दिए दू उसके किए नब जासन वा निचार्य कर
 रहा है, [जिससे] ए बंदिरा (बंदी) दू बपनी बुडि को हार रहा है।
 त्यों में [उनमें जो] ताड़ के पत्त पढ़ने है^२ [वे ऐसे लपते हैं] मानो इत
 प्रकार घोडा के पत्ते घोमित हों।
 [बा के रंगे हुए [२३] [उसके] बाँठ [एके] एते (रत्नबर्ष के) हैं कि जनी
 बाँठ (इव) से कर्पाटिका-मुस — बल [हो रहे] हैं।
 कंठ में मंडन (बामुलन) पांच लपों का [जो] लपता है उसको प्राप्त करके
 [मानो] मरन को हम प्रकार भेदक बना हो।
 मात पर (?) सोने की वाली की जाए [तो] मुक्ता के साथ होने पर भी [बह]
 हनी जाए।
 बाँध लपता ही [उसके] पले में नूपन है [२४] जिसको देन कर, ऐ बंदिर
 (बंदी) कीन जम माहित नहीं होता है?
 [उसके] बले में गुल का [बना हुआ] लडिनी वा जो हार है उसको देन कर
 [जन्म प्रकार] के हारा का जपहार (रयाग) हो गया।
 [उसके] भारी लपना के मध्य जो गुल का हार है, वह [मानो] नलों की घोमाओं
 के मध्य में लबिर (बुड) बुड (मयल) — हो।
 बाली (बालिका)^३ के बीच [उनका] भारी लपन बना है कि [२५] जेने
 गव्व के जमर के बीच बंदीमा हो।
 [उनका] गुल का हार रोमावली से [हम प्रकार] बलिग हो गया (बिल बना)
 है कि मानो नया वा जत यमुना [के जल] में मिल गया हो।
 उसकी जो बंडहाइया (बंडिबारा) उनमें रहती है वे बंडहाइया (बंडिबारा)
 डिजीका के बंडीमा की [हो रही] है।

१—बर्बमाना—बाग के आकार वा एक गिरोमुस जो बगबार पर लपता
 रहता है।

२—ताड़ के पत्तों के आकार वा एक बर्षाबलन (गन्धी ?)।

३—एक प्रकार का बलन गहीन जन्मन।

राजस बेल और उसकी भाषा

[उसके] अर्थों में मंडन [उसके] अर्थों का अंगवस्त्र है और उसकी कंठी का [२६] मृग ऐ बहिरा (बंदी), [अपनी जनमर्त्यता के कारण] बाक (कलकारोपण) [का कारण] बन गया है।

काष्ठों के पहिनाये की जो सोमा है [उसके समस्त] अर्थों (अल्प परिचाली) की छपाहवा होते पुन कर मुझे बलि कोष [होता है]।

[उसके किए] दो भोजनिया सेंदुरी^{१२} और लेकपल्ली^{१३} की की बाएँ, ती [उसका] कप देव कर सब मन लीन हो जाएँ।

[उसने] जो बल कपड़ा मोड़ रखा है, वह कैसा कपटा है जैसे मुक्त-सहि ने [२७] अन्तरिमा प्रसारित की हो।

पीड़ीयाओं का क्योंकि ऐसा अर्थ (नाम) है तब (इसलिए) उस वर्ष को जोर कर विष्ट (कथित) समस्त [वर्षों] को पीड़ बाकिए।

[जिसे] कैसा बने [वह] कैसा बीजे [किन्तु] उसके वेप का क्या (कोई) मूल्य है? ऐसी पीड़ी यव राजस [राजमवन] में प्रवेश करती है, [तब] वह [राजस] मानो [२८] स्वामी के द्वारा मंडित बीसता है।”

“ • • • • • ”

ऐ पीड़ तू एक [ही वाग्यवाली] है, और मैं होइ क्माता हूँ कि बूझ और कौन बह [कर के?] कौन पुनसे मन में (मन के कारण) बोले?

[किन्तु] जो फिर मातृकीयाएँ हैं [उनके] अर्थ (नाम) जाते ही कामदेव अपने सावर् हविहार भी मूल जाता है

[मनमें वह कल्पे हुए] “मैं यहाँ हवारी (हवारे छरीर की) ही दो चाकी बाँप [बना] कर छोड़ूँगी।”

उसके छरीका गया है इस लोक में [कोई] कि इस प्रकार सीसे (कट्ट सीसे) ? [उनकी] सीलों के ऊपर जो सीकड़ा दिया हुआ है उसका वर्ष कैसा भागा है,

जैसे वह कामदेव के छिन्नुरित राजादेव को वमस्कार कर रहा हो।

[१०] [उनके] ललाट एत [वर्ष के] करे [गुम्बर] और गुजमाण है के बीजे या ऊँचे नहीं है।

जहाँ देखने पर अष्टमी का चाँद ऐसा जाता है कि यह मुड़े-ठँके अलक-मिचानी का [ललाट] हो।

१२—एक बारीबार कपड़ा।

१३—बलिग भारत का एक महीन नक्षत्र।

सभी दोनो करी (मुन्दर) भीड़ों की भी भाड़ की भाँगी की प्रत्येक के हाथ की
वैस [११] काम [देख] ने कर में धनुषों को बड़ाया हो।

कहाट में तो [उन्होंने] जो करे (मुन्दर) तिलक दिए हैं उर्ध्वमे नाम है—
चंदरी (पार्वती) के बाल के कार्य के लिए पाया है।

उनके पुत्र (संपोष) में जाने वाली नाक तो ऐसी करी (मुन्दर) और सुरेण
(मुपड़) है कि [उसके बर्ष में] सब बर्षों का सीर्य उत्तर गया है [१२] ऐसा
किया है तुम भी ऐसा।

[उनकी] भाँगी की काँटें लीली उज्ज्वल और सरल हैं [और] उनका वचन करती
हुई बिद्या [इस प्रकार?] धूम्य होती है।

वैसा हविमार पाकर कामदेव जगन् को क्या करेगा ऐसा बृहस्पति को भी नहीं
सुझता है।

[१३] रत्न [बर्ष की] भाँगी में जो कर (मुन्दर) कायम दिया हुआ है वह
कैसा है, भाँगी धनुषों के मय से—वैसा बिधा हो।

पूर्वमा के बड़का को काड़ कर और हरिष को पछ में (कल्प) डाल कर
[उनके] दोनों कौल जैसे [बिधाता] ने किए (बनाए) हों।

उन्हें देग कर वहाँ (१४) सब वस्तुओं के हृदय [उन्हें] न जाने की गुनम (मानसिक
पीड़ा) के कारण यैम-यैस पड़ते हैं। वाली में है वनबायी (वनगायी)
वा वर्णन करने के लिए बोल गूट (कम पड़)
प्रा है।

कोन-कोन और बिठना नहीं जाने? इन जगन् में [इनका] धूम्य नहीं है।
उन्हें पहिले के अन्तर पहिले (मुनके?) [१५] कैम जाने है

भाँगी पूर्वमा ही पूर्वमा के ही पाँच उनकी कोह में उनके स्वाभाविक कोल
गुनने के लिए [बनाता] कार्य छोड़ कर सहीव आए हुए करने को मजिद
करते हा।

[उनके] नीचे-ऊपर के बोझा ने बरि [बहना है] वह थावा प्राय की है
जो दुरदवा प्रकाश [१६] और अजोह-गलरी में उर्ध्वमे मुष्ट कर ल ली [३]।

[बर्ष में] उनके समुदाय (मिलन) के लिए [उनके] धुन की धीमा मय रही है
[बर्ष] कोई भी [उनके] बरिषाम वा हल्य करे तो उनका वर।

बानी या बुद्धि है वह बुद्धि (बान्द) बानी (बनी-नारी) है हा वारन
उनकी ही ताम देना है।

[१७] [उन्हाँ] जो एक एकादही [बने में] — बाँधी है वह एक वार
भाँधी है

बानी गुणवत् की अकल्पता (गिरा) में सब में गलार्थ मय वान्द

— — — — — बाई हुई इस प्रकार नमस्कार करती हों।

[उमके] स्तन प्रभूत ऊँचे वर्तुल और पीन हैं

[बे] सोने के मंगल-मङ्गल जैसे पाते हैं।

[३८] अग्य कि [बे] कामदेव के बटों की [जो] बारि (बक) की बोट में हो,
घोसा पाते हों।

बिबली में रोमछाँचि है, और उसको बे जैसे बारण करती है

कि [मानो] घोसा के पक्ष में बी बाबों का बुद्ध हो [और वह] वहाँ [उस मुँह का]
निवारण करती हो।

वहाँ मंडन छाय (?) — [३९] — — — — —

और मोती का एक ही हार है।

उस[की] सोमा बेह कर वहाँ ऐसा लगता है

कि वह संसार असार [ही असार] हो गया है।

तो फिर जब उन्होंने हाथों और पैरों में सोने के बूँदे पहने

उसे देखकर [४०] तुम्हारे जो वेप हैं, वे सब कूड़ा (बेकार) लगते हैं।

उन्होंने रक्त जैसी बाहर और जली पटी (वरण) की जो कंचुकी पहनी है,

वह और ही सोमा कवि कहता है वहन करती है।

अरे, कामदेव ने सप्ताह [बारण] किया है

तो वह इस प्रकार तुम्हें नहीं छोड़ने को है ऐसा हीनों [४१] सुवन ही कहता है।

परिचारों के अवशेष को वहन कर काछड़ से जो घोसा [होती] है

वह [सोमा] क्या कोई [जी] अग्य वेप पाता है?

— — — — — अरे पीढ़ देसवासिबो गोसावरी दोषवासिबो

बोली जो जिसे नावे।

उन्होंने फिर — — — — — एक अवली (एकावली)

[४२] — — — — — उसकी घोसा को कीन नावे?

[उमकी] बयाव (बयाने)^{१४} कामधुम के आलमाल जैसी भावी है।

[उमके] पैरों के द्वारा रत्नरिपल — — — जीते जा चुके हैं

जिन्हें लोक में लक्ष्मी का निवास कहा हुआ गुना गया है।

— — — — — वर्तुल और उग्गवळ

[४३] — — — — — की — — — — — ।

१४—जी के आकार की सोने की बुर्रियों की वह माला जो मापी बर्बाद बने में
केवल लामने की और रहती है।

उन्होंने सब बैलों की जो लक्ष्मी (कान्ति) थी उसका व्यवहार कर लिया।

कहाँ था ही जो पारी है उसका सिंगूरी बैल है।

----- जो साँवली है उसका पाटनी का --- है।

----- ।

कोई उस घोमा की [४४] बारण करो पर [जान तो कि] उसने छाया [मात्र]
प्राप्त की

[६] शिन्धे आते ही आने हृदय में रति अत्यधिक लुप्त हुई।

तुम ही----- तुम्हारे साथ बाँटों में कौन जूमे (युद्ध करे) ?

बन्ध [४५] ---- वर्णन करे उनका जो वस्तुएं कार्य में वह [आवश्यक]
समर्थ।

इस प्रकार ऐसी सुखेय जित [४६] में आकर प्रविष्ट हों

--- वह राजल (राजकुल) कहा जमाये।

और कोई कहे ----- बड़े।

[४६] ॥ • ॥ • ॥ • ॥

रोड के हाट [४७] राजलबेल (राजकुल-विमल) नहीं पई,

और शत्रु बाणाबा की जैमी उमकी जाली थी ॥

इने सुनने हुए ----- [१]

----- वह हाम-शोष के लिए - [१]

----- [४७] --- [१]

----- [१]

सप्तदानुक्रमणी

संज्ञाएँ धिमासेल की पक्षियों की हैं ।

वि० (ईदुत) = ऐसा इस तरह का अइमी ५ अइमी १० अइमी १४
अइसी १४ अइमी २७ अइसी २७ अइसत ३२ अइसत ३२,
अइसत ३७ अइसत ३९

वि० (अपर) = अग्न्य दूरात् तद्विषय मउर २८ अउर ४५

पु० = (अद्य) = धीर अथि १७ अवर २५ (दे० वांम)

स्त्री० (अधि) = मांस मेव अधिहि १९

सक (आ+क्या) = कहना बोलना अक्यारह १५

अक (अन्) = होना अउर ९ अउर १६

पु० (आतन) = बैठने का स्थान अउण २२

स्त्री० (अहम) = हाल कलक (?) अइमी २१

(देगात्र) = गाथा अइहा १५

पु० (अनङ्ग) = वामदेव अग्न्य अर्णय १७

वि० (असार) = साध्वीम अयमारउ ३९, अ [मसार?] उ३९

अ० (अति) अति ४ अति ५, अति २९ अति ४४

अ० (अम्यवा) = तथा अन् ११

वि० (अम्य) = दूरात् अम १६

पु० (देगात्र) = (१) आयेल आयमेम अयवा आयस्य नाम वा
साधेयुष्य (२) जुह के ऊपर बांधी जाने वाली माता अम्येयल २०

स० (अमउ) = हम अमहागउ १०, अमहारे २० अमहारह २८

अ० (अरे) = संवापन वा मूचक अम्य अरे २१ अरे २१

अरे ४० अरे ४१

सक० (अप+ह) = आहरण करना, चीन लेना दूर करना

अवहृणुं ११ अवहृरी ४१

पु० (अमहार) = आहरण परित्याग अवहृणुं २४

पु० (अमोफ) = असीम अस्त्यह १९

पु० (अपर) = मोउ अह[ह] २

पु० (अहि) = ना अहि ९

वि० (आपल) = आपल दुअर अरह २७

(आ+तिङ्) = धीर-अमेम आउरउ ११

स्त्री० (अति) = मांस मेव अतिहि २, अतिहि ११ अतिहि
अरह १० अतिर ३२ अतिहि ३३

पु० (अद्य) = धीर अउण ४ अतिहि ७ अतिहि २५ (दे० अह)

स्त्री (देगात्र) = देव अन् २३

वि० (आण्ड) = अयनक अण्ड ९

राजस्थानी और उड़की भाषा

बाँवर	पु० (बगवर) = मध्य बाँवर बाँवरे २४
बाबू	सक० (बा + ब्या) = कहना बीकना बाबह ९ बाबहि १५
बाय	पु० (बह) = बाये का भाय बाये १९
बाहू	बक० (बत) = होता बाहहि ७
बाक	बि० (बच्छ) = लच्छ भिन्नक बाकड २
बाठमि	स्त्री० (बष्टमी) = बाठमी ठिठि बाठमिहि करत १०
बाड	स्त्री० (देवज) = बोट बाड बाडाह १०
बाधि	ब० (बल्लि) = ई बाधि १३ बाधि २७ बाधि २९ बाधि ३४
बाय	पु० (बर्ह) = बाया बायुबाह १७ बायह १८
बाग १ बाघ	स वि० (बग्य) = हुवर बाग २ बाग ९ बाग ५ बागहि १८
बागविक	११ बाघ १८ बाग २५ बाग १८ [बा] न ४० बाग (?) ४४
बागिक	वि० (बागविक) = इषित ९
	वि० (बागिक-देवज) = बक बाका बागिक ७ बागिक ८ बागिक ९
बापक	८ बागिक ९ बागिक ९
	वि० (बाप + वक) = स्त्रीय स्वकीय बापक १ बापकी २८
बापक	बापकाह २८ बापकी १५ बापकाह ४४
बात	वि० (बापुर्ह) = पूर्ण नरपूर बापुकी ९
बातबात	पु० (बाक) = कर्मकारोपक बीवारोपक बापु २५
बाहू	पु (बाकबात) = शरीर बाका बातबात ४२
	सक० (बा + या) = बाका बातमन करना बावह ५ बावहु
	२८ बावहि ४४ बावित ४५
बावकि	स्त्री० (बावकि) = वषित बेकी रोवावकि २५ एक बावकि ४१
बाविक	वि० (बाविक) = मलिन, अस्वच्छ बाविक ८ बाविक ८
बाहरण	पु० (बावरण) = मूषक बाविकार बाहरण ९
ह	ब (एक) = ही ह १ ह १२ ह १३ ह १४ ह २० ह २८ ह ३६
ह	ह १७ ह ४० ह ४४
ह	ब० (हकी < हवसु) = हस लोक में वहाँ ह २९
ह	वि० (हवर) = अग्य हुवर हवर १८
ह	सर्व० (एवसु) यह ह १२
ह	वि० (हिस) = ऐसा ह १० ह ११ ह १३ ह १४ ह १५
ह	ह ४० ह ४१ ह ४५
ह	ब० (हह) = यहाँ हस जगह ह १८
ह	वि० (हापत) = उषीय में जाका हुआ उभाया १५
ह	वि० (ऊन) = मूषक हीन उन १०
ह	वि० (हुकाट) = लुका हुआ अनाच्छादित बाबुबाह १७

- पु० (बीज्यस्य ?) = उज्ज्वलता उज्ज्वल २५
 पु० (भोद्वज - देवज) = उत्तरीय भोद्वनी उद्वज २९
 वि० (व्यपतित) = कंषा उग्रत, ऊपरका उपहर्षे ३५
 पु० वपमानु ३९
 वि० (वम्पल < वम्पल) = उज्ज्वलपुत्र उज्ज्वल १२
 पु० (वरेत < वरेण) = नाम-मिर्षा-युक्त वस्तु-निरूपण उवेसु
 २७ उवेसु २८
 : वि० (वज्र) = कंषा कंषत १२ कंषत १० कंषा १७
 वि० (उज्ज्वल) = निर्विक स्वच्छ ऊजल ८ ऊजला १८
 ऊजलाहं ४२
 वक० (वक + वृ) = उज्ज्वल नीचे नामा ऊज्रिमठ ३१
 व० (वपरि) = ऊपर ऊपर ९० ऊपर २१ ऊपरि २९
 व० (एव) = ही छोड़ २४
 व० (एव) = वह एव २९ एव ४६
 वि० (एक) = एक एक २० एक २८ एकावलि ३७ एक ३७
 एक ३९, एकवावलि ४१ (दे० एकर)
 वि० (एक) = एक एक १५ एकेय ११ (दे० एर)
 व० (एव < वर) = वही वही पर एव ८ एव कु११ एव १५
 व० (एव) एव २२ एव २१ एव ४०
 वि० (ईदृश) = इह प्रकार का वा इनके जैसा एदृश १ एदृश १९
 एदृश १८, एदृशी १८ एह ४५
 वि० व० (एतद्) = वह एह १० एह २१ एह ३० एहि ३४
 एह ३९
 पु० (भोव) = दाह भोव ७
 पु० (भोव) = होड भोव ३५
 ए० (देवज) = भोट बाढ़ भोट ३८
 वि० (भोविक < भोवीय) = उत्तम टीनीय भोविक ३०
 वक० (देवज) = भोवना भोविक २९
 ए० (दे० भोवना) = भोवा बावरी मविन भोवना १४ भावना
 २२ भोवना ३०
 वि० (बीद्वज) = बीना वदनी १४ वदने २० वदनी २१ वदना
 १४ वदने २९ वदना ३३
 व० (व + वृ) = बीन वद्व ४१
 पु० (वज्रपुत्र) = वीनी वद्वना ४ (दे० वज्र)
 पु० (वज्र) = वना वद्व १९

कडी	स्त्री० (कठिका) = गले का एक आभरण कडी १६
कम्पनि	स्त्री० (वेचन) = कान का एक आभरण - कम्पनिहि १६ (पुं० 'काचिन्')
कम्प	पु० (कम्पुक) = चौकी कम्प १७ कम्प १७
कम्प	पु० (कम्प) = एक प्रकार का पहनावा कम्प ४, कम्प १७
कम्प	पु० (कार्प) = काप कम्प १६
कम्प	म० (कम्प) = कहीं कहीं १६, कम्प १६
कम्प	पु० (कम्प + पार्प) = कान का एक आभरण कम्पहि १४
कम्प	पु० (कम्प) = पाक कम्प १६
कम्प	म० (कम्प) = काप कम्प १६
कम्प	सक० (कम्प) = करना करवत ११ करव १२, करव १२, करि ११ क [रि ?] २८, करि २६, कीए ११ करित १२ करि १२ करित १६, करव १६, करव १८
कम्प	पु० (कर) = हाथ करव २६, करव ११
कम्प	(कम्प + दमा) = कानों में पहना जाने वाला एक आभरण (कम्प बगल गले के पास पर कटके रहने के कारण भिन्नका गहना पहना होना) कम्प ११
कम्प	पु० (कम्प) = बड़ा कम्प १७
कम्प	वि० (कम्प) = मुक्त, सहित कम्प २५
कम्प	पु० (कम्प) = कम्प करने वाला कम्प २, कम्प १६, कम्प ४०
कम्प	सक० (कम्प) = कहना, बीटना, कहव ४१
कम्प	म० (कम्प) = गया कहा २६
कम्प	म० (कम्प) = गया का १० काई ११ कावतही १२, काव १४ काई १२
कम्प	स्त्री० (कम्प) = एक कम्प आभरण कम्पहि ११ (पुं० कम्प)
कम्प	स्त्री० (कम्प) = चौकी कम्प ४०
कम्प	पु० (कम्प) = चौकी कम्प ८, कम्प १२
कम्प	पु० (कम्प) = गला कम्पहि ७ कम्पहि ११
कम्प	स्त्री० (कठिका) = गले का एक आभरण कम्प १ कम्प ७ कम्प १२ कम्प २५
कम्प	स्त्री० (कम्प) = कमर पर बांधने का एक वस्त्र कम्प २६
कम्प	पु० (कम्प) = कम्प कम्प ८ कम्पहि ४१
कम्प	पु० (कार्प) = काप कम्प ११ कम्प १६ कम्प ४५
कम्प	पु० (कम्प) = कम्प कम्प १ कम्प [कम्प] ११ कम्प १६
कम्प	पु० (कम्प) = कम्प [कम्प] हि ७ कम्पहि ११ कम्प १४ कम्प २२, कम्प १४

पु० (कर्नाट+मोह)=कर्नाट से मिले हुए उड़ीसा के प्रान्त का निवासी कर्नाठ १०

पु० (कपट)=कपड़ा कपड २६ कपडहिर कपड ४३

पु० (काम)=काम्यैव काम्ये ८ काम्यकरी २१ काम्यदेउ २८ काम्यदेवह २९, काम्य ३१ काम्यह ३१ काम्यदेउ ३२, काम्यैवह कपड ३८, काम्यदेवह ३० काम्यपुमह ४२

स० (कपय)=कपा काहु २१

ब० (किम्)=कमा कि ३ कि ५, कि ५, विद कि १९, कि २७ कि ४१

ब० (किम् ?)=कि कि २९, कि ३८

वि० (कुत)=किया हुआ किजड १२, किजा १३ कियड ३३ कियड ४०

स० (कु)=करना किम्पह १५ (दे० कीज)

वि० (कीदुग)=कैसा किम तरह का कियड २९, विना ३५, विनी ३८ (दे० कीव)

ब० (किम्)=कमा की १९

स० (कु)=करना कीजह २३ कीजह २९ (दे० किम्प)

(दे० किम्) कीप ३१

वि० (कीदुय)=कैसा किस तरह का कीव १० (दे० विव)

पु० (कुव)=कर्मल यह कुव २४

एनी० (कवरि)=कड़ी कड़ी २२

पु० (कुट)=भ्रान्तिजनक वस्तु कुड़ा बेकार वस्तु कूडी ३६ कूडा ४०

स० (क)=कोन के ३४ के ३४

वि (विपु)=विठना वेठड ३४

पु० (कैय)=काम कैय १०

वि० (कीदुग)=किस प्रकार का कैरा १५, कैह २२

कही कैर २२

ग (क)=कोन कोड ५, को १० को १४ को २८ को २८,

कोड १५, को ४२ को ४३ को ४४ को ४५,

मर० (देयक)=बुलाया अहवाल करना कोडु १३ (दे० कीव)

(१ कोड) कोडु ११

पु० (काव)=कोट कोह १५

पु० (कोव)=का कोड ५, कोट २६

एनी० (देयक)=बन वा हुन मानवित पीडा मधुमह ३४

पप्	अक० (अप्) = नष्ट होना अपिपठ १४
पौप्	अक० (विज्ज < विद्) = खेर करना उद्विज्ज होना, कुशित होना । बीज २६
भूम्	अक (भुम्) = छोड़ पाना कुशित होना भूसइ १२
भूट	अक (भूट-देवज) = भूटना कम पड़ना भूटउ १४
भूत	वि० (भूत-देवज) = बलाघ भूता १३
भूव	वि० (भूम्) = सोम प्राप्त ब्रह्मप्राप्ता हुआ भूवी ४४
भौव	स्त्री० (देवज) = धिर के बाल भौपवकी २०, भौपहिऊनर, २० बौन २९, भौपहि ऊनरि २९,
बोहू	सक० (भोमप्) = बिचबिस्त करना बीर से च्युत करना बाहइ ७
गइ	स्मा० (गठि) = चाक गइ १४
गउहि	स्त्री० (वीहीपा) = बीड़ निवासी गउहिनु केरउ २८ गउहि २७
पठिज	वि (प्रविठ) = नूचा हुआ पठिजा २३
वप्	सक० (वचप्) = पिनना भिन्नी करना वधिप २१
पस	पु (गण्ड) = गाल कपोल पस १९
गम्मारिम्प	स्त्री० (घाम + पाल + इमा) = घामीचरा गम्मारि ९
पस	पु (गल) = गला घोवा कष्ट पसइ १ वसइ १२ वसहि २३
नाप	स्त्री (यहमा) = पंगा नदी नापहि २५
पाड	वि (पाड) = मिथि लात्र, मन्त्रवृत्त वृद्ध पाडउ ५४ पाडा ८ पाडी ८
बुज	पु० (बुज) = प्रत्यक्षा बभ्रु का रोना बुजइ १
भुजा	पु० (भुजाक) = एक प्रकार की सुपाटी भुजा २२
भोर	पु० (बीर) = धूमल वर्ण भोरी १५, भोरइ १७ भोरी ४३
भोस्म	पु० (बीस्म) = बोवावरी क्षेत्र का निवासी भोस्मे ९, भोस्मा ४२
भोह	पु० (देवज) = घाम प्रभुव बोहवा पुवव भोहा ९
गौड	पु० (बीड) = बवाल का एक भाग बववा उसका निवासी गौड १९, गौड २८ गौड ४१
पर	पु० (वड < वट?) = वट, भकान वड ५, वड १४ वरे १४
पर	पुल० (वड < वट) = बड़ा वरइ ३८
पापर	पु० (पधर-देवज) = लहना पापरेहि कैरा १७
पाक	सक० (वज्ज-देवज) = शासना पौजना पापित ३३
पेतल	वि (पूहीठ) = पकड़ा हुआ पेतले ९
पंड	पु (पण्ड) = पण्डमा पंड १५ पंड ३७
पंडहाई	स्त्री (पण्ड + भाविका?) = बखिया पंडहाई २५, पंडहई २५
पडाप्	सक० (देवज) = बड़ाना पडापिपठ ११
पागु	पु० (वगुप्) = बाग मैद बागुत करई ३३

- वि० (बंघ-देयज) = मुहर, मनीहर, रम्य चांगठ ४, चांगिम्य १ चांगा ९
 पु० (बग्न) = बंदना चांहि २१, चांया २५, चांहि २५, चां (हु) ३०
 चाहु ११ चांय ३५
 वक० (बन्) = बसना गमन करना चाकति १४
 वक० (देयज) = देयना चाहृ ११, चांहि ११ चाहृ १८ या (हि)
 २१
 वि० (बिन्तावद्) = बितापर बिन्तबंतहुं ७
 पु० (देयज) = हाथों या पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र चूडा १९
 वक (छंद—देयज) = छोकना छाडी १०,
 स्त्री० (छाया) = छाया छाव ४३
 वक० (छोटव्) = मुक्त करना छोडि कट ४०
 सर्व० वि० (मा) = मी जमु ३ १४ जे १७ जे २५, ज० २० ज २१
 ज ४० जमु ४१ ज ४१ जे ४२, ज ४१ ज ४१ ज ४१ जहि ४४ जहि ४५
 (१० ज जे)
 व० (जं < वन्) = कि ज २८ ज ३५, ज ३८ (१० जं)
 व० (जदा) = जब जहि १४, ज २७
 वि० (जायुज) = बीडा जिस प्रकार का जहमत १४ जहमे २० जहमी
 २१ जहसड २५, जहसे २७ जहसड ३० जहमी ४२, जहसी ४६
 व० (जदि) = यदि जड १०
 स्त्री० (जमुना) = जमुना नदी जडगहि २५
 व० (जम्) = कि जं ३
 पु० (जपा) = संनार जयही ३२ जगी (जपि ?) १४
 पु० (जग्न) = मनुष्य लोग जमु ११, जमु ११ जमु ११ जमु १६, जमु
 १८ जमु १८ जमु २४ जमु २६
 व० (देयज ?) = इस मानी जगि २० जपि २५
 व० (देयज ?) = इस मानी जमु ८ जमु २१ जमु २२ जमु २७ जग
 ११ जमु ३५, जमु ३७
 पु० (जल) = पानी जल २५
 पु० (जलर) = मेघ जलप २५
 पु० (जलार) = एक प्रकार का जलाली १९
 व० (जदा) = जब जवही ३९
 पु० (जवार्ज) = कण्ड का एक भाग एक प्रकार का जवहार जव'व ४२
 वि० (जव्) = जो या ५, या १४
 वि० (बावद्) = बिजने की बात २८

पु० (ममन्) = आवाय ममन् यह १७

म० (नहि < नहि) = नहीं यह १४

स० (तु) = वह तुम्ह १८, तहि सारित २९, तहि कर ३१ तहि ४३ तहिर ४३

म० (तु) = तू त २७ त ३६ त ३९, त ४०

वि० (तातु) = बीसा उस तरह का तहसह ३२

म० (तथा) = तथा त १४

पु० (तामूल) = पान तबील २

वि० (तरल) = चबल चबल तरल ३२, तरला ३२

स्त्री० (तहिमा < तहित) = बिजली तरीअबगु कर २४

वि० (तहक) = अजान तहकिह ३ तहका १२ तहकिम १० तम्ब २० तहपाई ३४

पु० (तल) = अपोमाम तलि सई ३५

म० (तन) = बही तह ५, तह ३३ तह ३८ तह ३८ तह ३९, तह ४६

वि० (तबा) = उम प्रवार का , तह १३

म० (तद) = वह ताफिर ३ तामु ४ ताहि ५, तारि २१ ताहि २१ तार २५, तारे २७ तान ३८, ताहफरी ३६ ताह ४२, तहि कपी ४२

म० (ताबद) = उस समय तक ताब १

म० (ताम-देमाज) = पाया ताये ८ तामु २३ तामउ २३

पु० (ताल) = ताक ताहर २२

पु० (तारक) = बह-मयन तारे २० तारे २१

स्त्री० (तिबलि) = नाभि के पास उदर ही की तीन रेखाएं तिबलि/ नाभि ३८

पु० (विमुवन) = आवाय-गानाल-अरबलोव तिज [वन?] ४०

वि० (तिमल < तीमल) = बीना तम तीला ३२

म० (तु) = तू तु ३ तु १८ तु ३१ तु ३० तु ३१ तु ३१

म० (तवन्) = तुम तुमवि ९ तुम् १५, तुम् १५, तु [ह] १५, तह १९, तह १९, तु २१ तह लहु २८, तुम् २८ तुम् ३२

वि० (तुच्छ) = आप तुछ २

म० (तवन्) = तुम तुमरा [त] ४ तुम् ४० तुम् ४४ तुम् ४४ तुम् ४४

तुच्छ हाता तुछ २

स्त्री० (तुय + दवा) = अमानता अरीग-अन मुनिअ ५

म० (तीरन्) = अमान करना अम्पुट करना मुनिउ ३६

तेलें	सर्व० बह० (ते) = ते १, तैहें ७१ ते ७ तैह्या ९, ते ९, ते १७, ते १९, ते २०, ते २५, तें २९, तें ३१ ते ३२, ते ३३, तेहर ३४ तैहि कर ३५, तें ३६, तें ३९, ते ४०, तें ४०, तें ४१, तैहर ४३
तेम्	ज० (तम) = बहाँ तेम् ११ तैहें ४४, (ते० ता)
तेम्	ज० (तेसज) = उस प्रकार तेम् १
तेह	वि० (तावृष) = उसके बीसा, बीसा तेहा १५, तेहा १९ तेहर १९, तेहर २७
तो	सर्व० (स्वम्) = तुय तो ९, तो (?) ९, तोही १०
तीर	सक० (तोह < तुह) = तौम्मा तीरछ २७
तोस	पु० (तोप) = तौतोप तोसैं ४६
न	जक० (जस्) = होना नह ११ नह ११
नम	पु० (स्तन) = कुन नमहि १२, नमहि १७ नम १७ नमह २४ नमह २४
नाह	वि० (पहू < स्तम्भ) = निरुपल अभियापी पर्वीला नाहा ८
नह	वि० (बृह) = मन्बृह नम्मान पीला नह ८
नसज	पु० (बसज) = बति नसज २२
दिठ	वि० (दे० बीठ)
दिठ	वि० (दिष्ट) = कथित प्रतिपादित दिठ २७
दिठहुक	पु० (बृष्टि + फुस्त) = बृष्टि का पुपव दिठहुक ९०
दिठि	स्त्री० (बृष्टि) = बृष्टि नगर बीठि ७
दित	वि० (बीष्ट) = प्रकाशित कतिपुक्त नमकीला दित १९
बीह	सक० (दिग्म-मा) = देना बीह
बीठ	वि० (बृष्ट) = देना हुमा बीठे १९, बीठे १९
बीन	वि० (दिग्म < वर) = दिया हुमा बीन ११ बीन २९, बीन ३३
बीस्	जक० (बृष्ट) = दिखाई पड़ना बीन ११ बीन २४, बीनहि १७ बीन २८
बीह	वि० (बीर्ष) = बड़ा बीह ११
डु	वि० (डि) = बी डुमनी २९, डुह १५
डुह, डुई	वि० (डि) = बी डुह १९ डुई ३० डुई ३३
डूम	पु० (डूम) = बृत्त कामडूम ४२
दे	सक० (दा) = देना देह २ ४९
देल्	सक० (दुष्ट) = देखना देखति १, देग १० देह १० देह १२ देहि १९, देहि २० देह २१ देह २१ देहि २१ देहि २४ देहि २४, देहि २६, देहि ३०, देह ३३ देह ३६ देहि [?] ३९

दे	उक० (देय्) = कहना देयु ९
पडिबन	पु० (देयज) = कान का एक आभरण पडिबनहूँवि ७ पडिबन ३४
धनु	पु० (धनुय) = धनुय धनु २१ धनुई ३१
धर	उक० (धृ) = धारण करना, पकड़ना धरह ३८ ध[र]ठ ४१
धरल	वि० (धरल) = धरेल धरलर २६
धत्	अक० (धत्) = धतना नीच धाना धत् ३४ धन ३४
धा	अक० (धात्) = दीहना धावह १८
धठ	वि० (धृष्ट) = धीठ धेठ ८, धठे १९
न	अ० (न) = नहीं न ११, न १२ न १३, न १४ न २१ न २४ न ३० न ३४ (दे० 'नहीं' तथा 'ना')
नठ	उ० (अप० नठ) = कोई नहीं नठ ११ नठ ११
नर	अ० (अप० न) = इव मानी ३२
न	अ० (अप० न) = इव मानी न १७ न १७
ननर	पु० (ननर) = पञ्जीलिष्क-विशेष ननर ३७
नही	अ० (नहि) = नहीं नही ४० (दे० न तथा ना)
ना	अ० (न) = नहीं ना ११ ना ११ (दे० न नहीं)
नाक	पु० (नक-देयज) = नाक नाकिना नाक ११
नार	उक० (नय्) = नमन करना, प्रणाम करना नावह २२ नावह २९ नावहि ३५, नावह ३७
निशाल	अ० (निलाह < ललाह) = शाल निशालि ३१ (दे० निलाह)
निरी	वि० (निरिब-देयज) = अवशिष्ट निरी ४०
निक	अ० (निक-अप) = निरिधत् निक ९
निलाह	अ० (निलाह < ललाह) = शाल निलाहु २९ (दे० निशाल)
निलाही	एकी० (ललाहिना) = ललाह वर पड़ना जाने वाला एक आभरण निलाही २१
निवाह	पु० (निवाह) = निवाह निवाह ३८
निवाल	पु० (निवाल) = खूने का स्थान निवाल ४२
निमुन	अक० (नि + भृ) = मुनवा धरन करना निमुन-४९
निहाम	उक० (निवाल < नि + वालय्) = देलना निरीयन करना [नि] हामि १६ निहामि १७ निहामि १८
नेर	अ० (नृपुर) = निरों के बीरो का एक आभरण नेरछपी ११
नो	वि० (नर) = नरा नो २२
परह	उक० (परिह < इरिम्) = इहेय करना परहह १४ परन १६ परहह २७ परनह ४९

पहल	उक० (परि+वा) = पहनना पहलिया ३४ पहलिया ३८ पहली ४० पहलिया ४१
पहलन	पु० (परिवान) = पहनावा पहलनह ४१
पद्	अक० (पद्) = पड़ना पड़हि ३४ (दे० पद्)
पडि	स्त्री० (पनी) = बस्त्र कपड़ा पडिह, ७ पडि ४८ ४
पनु	पु० (पन) = घर्त होइ पनु २८
पमलन	पु० (परिवान) = पहनावा प [मल] नु ३६ (दे० पहलन)
पद्	अक० (पद्) = पड़ना परे १५, पर १८ पड़ १८ (दे० पद्)
पर	अ० (परम्) = कपड़ा परम् पर १३ पर ४४
पर	वि० (पर) = केवल मात्र पर १५
पस्तन	पु० (पस्तन) = किष्कन्द पत्ता पस्तनह ३६
पवाव	पु० (पवाव) = सही ठीक सच्चा सुपवाव ३०
पवाक	पु० (पवाक) = पूर्ण विद्वान् पवाकह ३५
पतार	उक० (प्र + तारम्) = फैलाना पतारेक २७
पहिरण	पु० (परिवान) = पहनावा पहिरण ४ पहिरण १३ पहिरण १७ पहिरण १८
पहु	उक० (परि+वा) = पहनना पहिले २२,
पहु	वि० (पहुत < प्रभूत) = प्रभुर पहुला ३७
पा	पु० (पाव) = चरण पाह १५
पावराय	पु० (पाव) = चरण पावेन् ५, पाहहि ५, पावही ३९ पावही ४२ (दे० पा)
पाव	वि० (पञ्चम्) = पाँच पावसर २३
पाव	सक० (पाव < प्र + वा) प्राप्ति करना [पा] वइ ३ पाव ४ पाव ५, पाविमइ ३१ पाविउ ३२ अपाविमकरी ३४ पावहि ३८ पावइ ४१ (दे० पावम्)
पाल	पु० (पला < पला) = और, तरक पालह १८ पाल १८ पावइ ३१, पालइ ३८
पाटन	पुत्रराय का भय-विशेष पाटनी ४३
पाटी	स्त्री० (पट्टिका) = पट्टी पाटी ८
पात	पु० (पत्र) = पत्ता पर्ण पात २३, पात २२
पाठन	वि० (पठन-वेदाङ्ग) = पठना वृत्त पाठनी १०
पाव	उक० (पाव < प्र + वा) = प्राप्त करना पावइ ४२ (दे० पाव)
पारवी	अ० (पराविवा) = एक प्रकार का महीन वस्त्र पारवी ३४

- पाहिसिवा स्त्री० (पाहिसिवा) = स्त्रियों के पीरों का एक आभरण पाहिसिवा ९
- पीन वि० (पीन) = पुष्ट यावत् पीना ३७
- पु० (पुट) = मित्र संबंध मत्त पुटि ८ पुहह ३१
- पु० (पुनर) = फिर पुपू २८ पुपु १९, पुपु ४१ (पु) पु ८६
- पु० (पुन) = लड़का पुव १५, पुव २३
- वि० (पुनल < पीन) = लीनता पुनूषी १२
- स्त्री० (पुमिमा) = पूर्वपामी पुनिबहि कर ३३ पुनिबहि कर ३५
- पुनिबहि कर ३५
- लक० (परि < वा) = पहना पहिबल २५
- पु० (परिपाव) = पहनावा [४] लल परि २६
- लक० (करकप) = करकर करना कपहना कपहरे पर १३
- पु० (कल) = कल कलह ३५
- पु० (कडर-दीपज) = काँक बंग भाप काटा ३२
- लक० (रकाटप) = काटना काडिड ३३
- पु० (कुम्भ) = कुल पुपु कुन २ कुम्भे ६ कुम्भ २०
- लक० (कुम्भ) = कुम्भा पुपुपुपु हावा विकसित होना कुम्भ २०
- लक० (करोप) = परित्याग करना कडि ३५
- लक० (कु) = होना मड २२ मड २४
- स्त्री० (भू) = नीह मडही २१ मडह ३०
- पु० (भाप) = हिम्मा टुकड़ा दुमनी २९
- लक० (मप) = बहना बीनता मप ९, मपित ४२ मपड ४५
- म० (मप) = डर मड २८ मपड ३३
- पु० (भाप) = बाई भाड म १०
- वि० (मल < मड) = मपडा भाड ५, भाड ३ भाड ३४
- म० (भाड) = लगाट भाडिहि कर ३३
- मड (भाप?) = बगर होना मपडा लपना भावड २ भावड ४ म
- [विड] १२ भावड १४ भाववि १९, [भा] बह २२ भावड २० भावड ३० भाववि ३५ भावड ३७ भावहि ३८ भावड ३९ भावहि ४० भावड ४१ भावड ४२
- स्त्री० (भावा) = बीनी भावह ३६
- मप० (भिड) = भीषता भिडह ३५
- मड (भग) = मूतना मूतनि १९, मूत २८
- म (मूतप) = मूतहार मूतना मूतपु ६३
- वि० (भरक) = विराट भैमन २३
- पु० (भरक) = मदन-पद मदन ३७
- भाव विगु मूत मूतन भैमन मदन

मं	सक० (मं) = मूषित करना मंडितक १५
मंडन	म० (मण्डन) = मूषण मूषा मंडन १५
मण	पु० (मण) = मन मण २०
मण	म० (मण) < मनाण = मीठा मण मण २, मण २, [म] मण ५, मण ५
मत्त	वि० (मत्त) = मत्त-मुत्त, मत्तवाला मत्ता १५
मयण	पु० (मयण) = कर्ण का मयण मयण १० मयण १५, मयणहि ११
मह	सक० (मह < मूह) = मीथना मसकना मसना मक १८ मक १८
मांड	सक० (मण्ड) = मूषित करना मांड ७ मांडी ९, मांडी १० मांडे २८
मांडन	न० (मण्डन) = मूषण मूषा मांडन २१ मांडन २५, मांडन ३८ (दे० 'माण्डन')
मांस	न० (मण्ड) = मीथ मांस २४ मांस ३८, मांस ४५
माण्ड	वि० (मूष) = मूषण या मिकना मिकना मूषा माण्ड ११
माठी	वि० (माण्ड < माण्ड) = मूषणवाला मण्ड माठी ९
माण्ड	म० (माण्ड) = मूषण मूषा मा[ण्ड] २, माण्ड ३ (दे० माण्ड)
मात	वि० (मात) = मत्त-मुत्त मत्तवाला मात २१
मातन	पु० (मातन) = मत्त मत्त-विशेष मातन २८
माप	पु० (माप) = मप (१) माप २१
मिळ	सक० (मिळ) = मिकना मिळ २५
मीठ	वि० (मिष्ट) = मीठा मीठ मीठे १९
मुह	पु० (मुह) = मुह मुह १५, मुह २१ मुहसि २२, मुहसि २५ मुहकरी १५, मुह १७
मू	सक० (मू < मुह) = मीथ होना मू २० [मु] मू २४
मेही	पु० (मेहि) = मकरिया माहि-विशेष मेही ९
मो	= मू - मोहि ५, मोहि २५
मोती	पु० (मोति < मोतिका) = मुक्ता मोती मोती ११ कर २९
मोता	स्त्री० (मूता < मुक्ता) = मोती मोता २१
मोस	पु० (मूस < मूस) = मीस मोस २७ मोस ३४
मोह	सक० (मोह) = मूषण मोह १ मोही १० मोह ११ मोह ११ मोह १५
म्यामि	पु० (मय्यम < माय्यम) = मय्यमता मय्यमता म्यामि २०
म्याम	पु० (मय्य) = मीथ का मय्यमता मय्यम म्याम ११
र	म० (मरे) = मरीचक मरीचक वाष्पित के लिए मरुत मरु २१४ २१८ २१७ २४० २४१ २४३ २४३
रंग	पु० (रङ्ग) = रङ्ग रंग रंग १७
रवाण	पु० (रवाण) = रवाण रवाण १९

रु० (रत्त < रत्त) = सात वर्ष, सात रंज रत्त खिर रत्त १० रत्त
११ रत्त ४०

रु० (रति) = कामदेव की बड़ी गिनी रति ४४

रु० (रत्नोपल) = सात कमल रत्नोपल ४२

रु० (रत्नो) = रात रत्नोमुही २१

रु० (रति) = सूर्य रति २०

रु० (रत्नित) = रंजा हुआ रंज २२

रु० (रति) = खेती रोमपाद १८

रु० एक नायिका का नाम रात [क] ११ रात १२ रात
रात १४

रु० (राजकुल) = राजपूत रात १० रात १४ रात २८ [क]
रात ४५ रात ५५ रात ५५

रु० (राजन्) राज १

रु० (राज्य ?) रात १

रु० (रत्त < रत्त) = सात वर्ष सात रंज रात २ रात ४, रात
१२ रात २१

रु० (राह-केसव) = बलि या खेत केसवाका राह १९

रु० (राह) बह-विशेष राह २०

रु० (रिष्ट) = बल्य (?) राह ८

रु० (रुन) = बहानि रुन २६

रु० (रुन < रुन) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रुन) = रुन रुनी ११ रुन १० रुनीहि १० रुनी ११

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

रु० (रु) = रुनमा पर्वतपर्वता रुन २८ रुन ४५

कायल	पु० (वेद्य) = वस्त्र-विशेष कायल १२
काय	वि० (काय) = कथा हुआ काय २३
काष्ठि	स्त्री० (कस्मी) = कस्मी काष्ठि २८, काष्ठिहि कर ४२, काष्ठि ४१
काठा	वि० (काठ-दे०) = सुहर, रम्ब का ठा ८
कान्	सक० (कान्) = प्राप्त करना कावी १५, कावी १५, कावी ४४ दे० कान्
कान्	वि० (वेद्य) = गम्हा होटा कान् ८
के	सक० (कय < का) = केना बहूत करना लिखहि ७
सेव	पु० (केव) = केवा केवु १२
लोक	पु० (कोक) = बल लोप समाज लोकहूँ ७ कोकहि ४२
लोनवि	स्त्री० (लोनवता) = लोनव लोनवि ७
बहिरो	पु० (बहि < बन्दिन्) = स्तुति-पाठक बंधन-पाठक बहिरो १५, बहिरो २२ बहिरो २४ बहिरो २६
बलाव	सक० (व्याख्याव) = विवरण देना कान् बलावी १ बलाव ११ बलावी ४६
बलवा	पु० (वेद्य) = वस्त्र-विशेष पछेला (?) बलवा १८
बलवाव	स्त्री० (बलु) = पदार्थ नीच बलु १७ बलु ४५
बल	वि० (बल) = बला हुआ बल १५
बल	पु० (बल < बर्ज) = बल बली ५
बलवार	स्त्री० (बलवार < बर्जवाला) = ककट पर का एक बालरन बल वारी २२
बल	सक० (बल < बर्ज) = बर्ज करना बलिग्रह १५
बल	पु० (बल) = बल बल २ १८
बर्ज	वि० (बर्ज) = पामर, मूर्ख बर्ज २१ बर्ज २१ बर्ज २१
बलिज	वि० (बलिज) = लिखको बल बलिज बला हो रस्ती बलिज ६
बह	सक० (बह) = बालन करना बह ४
बा	स० (बागी?) = बह बाही २५ बाही ४०
बाजल	वि० (व्याकुल) = बला हुआ बला (बाजल) = उग्रावस्थ बाजल १२
बाज	पु० (परा) = बाबा बाज १४
बाज	सक० (बर्ज < बर्ज) = बर्जना बाज २९
बाटुल	वि० (बर्जुल) = बलावार बाल बाटुल १७ बाटुल ४२
बाज	वि० (बल) = बला हुआ बाज ४ बाज १, बाज २० बाजी ३०
बाज	सक० (बल < बर्ज) = बर्ज करना बाज १ बाज १९ बाज १९
बाज	बाज १२, बा(ज) १५, बाज १५

बन	पु० (बन < वन) = वन बानू ८ बानउ ११ बान २७ २९ बानाहू ११
बाननी	स्त्री० (बानिनी) = बनी नर्तकी मायाविनी स्त्री बानगी १६
बार	म० (बारय्) = रोफना निगम करना बारसि २२
बारि	म० (बारि) = बल बारि १८
बात	स्त्री० (बाता) = बाला स्त्री बाल १७
बाहड़िब	पु० (बाहु) = हाथ भुजा बाहड़िबउ १२
बि	बि० (डि) = बी बि० २६ बि ४१
बिबदन	पु० (बिबदिन) = बनेनी की जाति का एक फल बिबइल ६
बिब	पु० (बिब-देगात्र) = बीब मध्य बिब २५
बिब	म० (बिबा < बिना) = बिना बिबु ५, बिबु २२
बिब	पु० (बिब-देगात्र) = बीब मध्य बिबुमहि १७
बिबु	म० (बि + लब्) = प्राप्त करना बिलपी १६
बीब	बि० (बिब < द्वितीय) = द्वितीया तिथि बीबर २५
बीबी	स्त्री० (बिम्बी) = कंदक की सता बीबी १५
बुडि	स्त्री० (बुडि) = मति प्रज्ञा बुडि २२ (दे० बुबि)
बुब	सब० (बुब < वब्) = बहना बुबइ ४५
बुल	सब० (बुब्) = जानना समझना बुलइ ४५
बुबि	स्त्री० (बुडि) = मति प्रज्ञा बुबि १६ (दे० बुडि)
बुहलपि	पु० (बुहलपि) = देव-गुरु बुहलपिही १२
बे	बि० (डि) = बी बेरगा १७
बेटी	स्त्री० (बुल + इता) = कन्य-पुत्र आदि का सम्बन्ध बेटी २६
बनी	स्त्री० (बिदुगी-देगात्र) = बुधी लड़की बटिया ५
बनुल	बि० (बनुल) = बुलाकार, बाल बेदुला २२
बेद	पु० (बड < बष्ट) = बष्टन मटन बगभु २०
बेन	पु० (बेन्ल-देगात्र) = बिलाल बाल-मीड़ा राउल बेन ४६
बेन	पु० (बन) = घरीर पर बस आदि की मज्जा बेन ५, बेनु ९, बेनु १० बेन १९, बन १९, बेनहि २७ बन ४०, बेनु ४१, बनहू करी ४३ बेनु ४३ नुबेन ४५
बेर	म० (बीण) = रंगना बेनु १५ बेनु १८
बोर	पु० (देगात्र) = बाहर उत्तरीय बोरा ८ बाट ४०
बोनाबान्न	म० (बोन्न-देगात्र) = बीन्ना बटना बोन्ने ९ बान ३८, बानउ ४१
बोन	पु० (बीन-देगात्र) = बीन बनबन बोनु २७ बीनु १४ बोनु १५, बीनहि ४४
बोन्न	पु० (बीन-देगात्र) = बीन बनबन बोन्न १८ (दे० बीन)

हास	पु० (हास) = हँसी हासों १ हासों ४१
हिप्ही	अ० (हि) = ही चमेसुहि १८ पुमिषहि पुमिषहि १५, तिषतिहि १८, बाही ४०
हिमभीम	न० (हिमय < हृय) = हृय हीमा १४ हिमा ३४ हिमर ४४
हिहि	अ० (हि) = ही ही १९, ही ४१ ही ४३ हि ४४
हृहृहृहृ	अ० (वेद्य) = यी हृ १५, हृ १५, हृ २० हृ २३ हृ २८ हृ २८, हृ ३२, हृ ३३ हृ ३८, हृ ३९
हृ	अक० (भू) = होना हो १७ हृ १८ हृमर ३९
हृय	वि० (भूत) = बना हुआ हृयें २३
हृय	हृय (हृय) = वस नाम के प्रसिद्ध अनाय वेद्य का निवासी हृमि ९
हो	ऊ० (हो) = संबोधन या आग्रह का अन्वय हो ४१ हो ४१



